A Daily News Magazine
भोपाल
गुरुवार, 11 दिसंबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 101, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

शरद की सुबह

ये सर्दियाँ क्या हैं
मौत का
क़हर हैं

गरीब की हड्डी–हड्डी
तड़प रही है
तन ढकने को
कपड़े भी नहीं है

पेड़ भी ठिठुर रहे हैं
पत्ते–पत्ते भी
मौत के ग्रास बन रहे हैं

साँस–साँस को
हवा बेचैन बना रही है
श्मशान की ओर
ले जा रही है

लेकिन बच्चे
फिर भी
नाच–कूद रहे हैं
अपनी मस्ती में डूबे
सर्दी को चुनौती
दे रहे हैं।

–दुर्गाप्रसाद झाला

प्रसंगवश

महाविराट ओजोन छिद्र जल्द बंद होने से बढ़ी वैज्ञानिकों की उम्मीदें

ललित मौर्य

2020 से 2023 तक बने विशाल और लंबे छिद्रों की तुलना में 2025 का ओजोन छिद्र कम गहरा रहा और जल्द बंद हुआ, जिससे वैज्ञानिकों की उम्मीदें मजबूत हुई हैं।

2025 में अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन छिद्र एक दिसंबर को बंद हो गया, जो 2019 के बाद सबसे जल्द बंद होने का रिकॉर्ड है।

इस साल ओजोन छिद्र आकार में छोटा और गहराई में कम रहा, जो ओजोन परत के सुधार की दिशा में सकारात्मक संकेत है।

यह घटना धरती और भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक आशा की किरण है।

2025 में अंटार्कटिका के ऊपर बना ओजोन छिद्र एक दिसंबर को बंद हो गया, जो 2019 के बाद सबसे जल्द बंद होने का रिकॉर्ड है।

यह लगातार दूसरा साल है जब ओजोन छिद्र आकार में छोटा रहा और इसकी गहराई भी पहले की तुलना में कम रही। अच्छी खबर यह है कि 2020 से 2023 तक जो बड़े और लंबे समय तक बने रहने वाले ओजोन छिद्र देखे गए थे, उनकी तुलना में इस बार ओजोन परत में ज्यादा ओजोन मौजूद थी। यह संकेत देता है कि ओजोन परत धीरे-धीरे सुधार की राह में आगे बढ़ रही है।

कैसा रहा 2025 का ओजोन छिद्र?: अंटार्कटिका के ऊपर साल दर साल ओजोन छिद्र अगस्त से दिसंबर के बीच बनता है। इस साल इसने अगस्त के मध्य से बनना शुरू किया, जो सामान्य है। सितंबर की शुरुआत तक इसका आकार बढ़कर 2.1 करोड़ वर्ग किलोमीटर तक पहुंच गया।

देखा जाए तो यह आकार में विशाल जरूर है, लेकिन 2023 में बने 2.61 करोड़ वर्ग किलोमीटर के विशाल छिद्र कि तुलना में बेहद छोटा है।

इसके साथ ही सितंबर में ओजोन छिद्र का आकार सिमटना शुरू हो गया, लेकिन पूरा महीना यह डेढ़ से दो करोड़ वर्ग किलोमीटर के बड़े दायरे में बना रहा, जो करीब-करीब अंटार्कटिका के क्षेत्रफल जितना है। अक्टूबर के अंत तक भी यह इसी आकार में बना रहा। लेकिन नवंबर में यह अचानक तेजी से सिमटना शुरू हुआ, जिससे उम्मीद बनी कि यह बहुत जल्द बंद हो सकता है। आखिरकार एक दिसंबर को यह बंद हो गया, जो चार दशकों में सबसे जल्द बंद होने की घटनाओं में से एक है।

इस साल क्या था खास?: कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस द्वारा इस बारे में साझा जानकारी के मुताबिक हाल के वर्षों की तुलना 2025 के ओजोन छिद्र में कुछ असमान्य बातें सामने आईं। उदाहरण के लिए इस ओजोन परत का न्यूनतम स्तर पिछले वर्षों से बेहतर था। इसी तरह ओजोन की कमी (ओजोन मास डेफिसिट) भी सामान्य से कम रही। इन दोनों वजहों से इस साल ओजोन छिद्र कम गहरा और कम नुकसानदेह था।

इस दौरान वायुमंडल की ऊपरी परत यानी स्ट्रैटोस्फियर में हवाएं कमजोर रहीं, जिससे बाहरी इलाकों से ओजोन से भरपूर हवा अंदर आने लगी। इन सभी कारणों ने ओजोन परत को नुकसान कम पहुंचने दिया और गिरावट धीमी हुई।

2020 से 2023: लगातार बड़े और लंबे छिद्र: कॉपरनिकस द्वारा जारी रिपोर्ट के मुताबिक 2024 में भी ओजोन छिद्र अपेक्षाकृत छोटा रहा। यह सामान्य से देर से विकसित हुआ और औसत समय के भीतर बंद भी हो गया। लगातार चार वर्षों तक 2020 से 2023 के बीच बेहद बड़े और लंबे समय तक टिकने वाले ओजोन छिद्र देखने के बाद 2024 का यह छोटा और कम अवधि वाला छिद्र वैज्ञानिकों के लिए उम्मीद की किरण बना, मानो ओजोन परत धीरे-धीरे सुधार की ओर बढ़ रही हो।

विश्व मौसम विज्ञान संगठन ने भी सितम्बर 2025 में जारी ओजोन बुलेटिन 2024 में कहा था कि पिछले साल ओजोन परत को होने वाला नुकसान कम रहा। रिपोर्ट के मुताबिक साल 2024 में अंटार्कटिका के ऊपर बनने वाला ओजोन छिद्र हाल के वर्षों की तुलना में छोटा रहा।

क्यों बने इतने बड़े ओजोन छिद्र?: इसके उलट, 2020, 2021, 2022 और 2023 के ओजोन छिद्र असाधारण रूप से बड़े और लंबे समय तक बने रहे। इनमें से 2020 का ओजोन छिद्र सबसे देर से 28 दिसंबर 2020 को बंद हुआ, जो अब तक के सबसे देर से बंद होने वाले मामलों में से एक था। गौरतलब है कि पिछले कुछ वर्षों में ओजोन छिद्र के बड़े होने की कई वजहें रही। इनमें से एक हुंगा टोंगा-हुंगा ज्वालामुखी में 2022 में हुआ विशाल विस्फोट था, जिसने स्ट्रैटोस्फियर में पानी और राख की भारी मात्रा पहुंचाई। इसी तरह जलवायु परिवर्तन भी इसकी वजह बन रहा है। जलवायु में आता बदलाव ऊपरी वायुमंडल को ठंडा कर देता है, और ठंड जितनी ज्यादा होती है, ओजोन छिद्र बनने की आशंका भी उतनी अधिक होती है।

आमतौर पर सर्दियों में अंटार्कटिका के ऊपर बहुत ठंड होती है। इस दौरान बादल जम जाते हैं और तेज हवाएं एक ठंडा 'पोलर वॉर्टेक्स' बना देती हैं। वसंत में जब सूरज उगता है तो ओजोन को नुकसान पहुंचाने वाले रसायन (जैसे सीएफसीएस आदि) बादलों की सतह पर सूरज की रोशनी के साथ तेजी से प्रतिक्रिया करते हैं और ओजोन को नुकसान पहुंचाते हैं।

गौरतलब है कि 1980 के दशक में जब वैज्ञानिकों ने पहली बार चेतावनी दी कि अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन तेजी से खत्म हो रही है, तो दुनिया हरकत में आई।

उम्मीद की किरण: इसके बाद 1987 में मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल पर दुनिया के करीब सभी देशों ने हस्ताक्षर किए और ओजोन-नाशक रसायनों पर रोक लगाई गई। इन्ही का नतीजा था कि धीरे-धीरे ओजोन परत में सुधार आने लगा। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2023 में जारी रिपोर्ट के मुताबिक ओजोन-नाशक रसायनों (ओडीएस), जैसे क्लोरोफ्लोरोकार्बन पर प्रतिबंध से ओजोन परत के धीरे-धीरे ठीक होने का रास्ता खुल गया। रिपोर्ट के मुताबिक, इन रसायनों पर रोक ने वैश्विक तापमान में लगभग 0.5 डिग्री सेल्सियस की अतिरिक्त बढ़ोतरी को भी रोकने में मदद की है।

वैज्ञानिकों ने उम्मीद जताई है कि 2050 से 2066 के बीच यह परत पूरी तरह ठीक हो सकती है। 2025 का छोटा और जल्द खत्म हुआ ओजोन छिद्र यह दर्शाता है कि हम सही दिशा में हैं, लेकिन मौसम और ज्वालामुखी जैसी प्राकृतिक घटनाएं अब भी ओजोन परत को प्रभावित कर रही हैं। यह खबर धरती और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सकारात्मक संदेश है कि अगर दुनिया मिलकर काम करे, तो बड़े से बड़े पर्यावरण से जुड़े संकट भी टाले जा सकते हैं।

('डाऊन टू अर्थ' हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

चुनाव सुधार पर

लोकसभा में घमासान

● हम घुसपैठियों को भगाना चाह रहे, आप क्यों भागे: अमित शाह

राहुल और शाह में तीखी नोकझोंक, कांग्रेस ने वॉकआउट किया, लोकसभा स्थगित

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में चुनाव सुधार और एसआईआर पर गृहमंत्री अमित शाह की स्पीच के दौरान जमकर हंगामा हुआ। नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के साथ तीखी बहस हो गई। राहुल ने गृहमंत्री को डिबेट का चैलेंज दिया। नोकझोंक के बीच कांग्रेस ने सदन से बहिष्कार कर दिया। लोकसभा कल सुबह तक स्थगित कर दी।

अमित शाह ने कहा कि कल जब भाषण तैयार कर रहा था, तब सोच रहा था कि ये मुद्दा क्यों उठा है, मूल मुद्दा है घुसपैठियों को संरक्षण, इस पर विपक्ष ने हंगामा कर दिया। कांग्रेस के सदस्यों ने शाह के जवाब के दौरान सदन से वॉकआउट कर दिया, इस पर किरेन रिजिजू ने कहा कि जवाब सुनने की हिम्मत नहीं है और सदन में गतिरोध कर रहे थे, अमित शाह ने कहा कि घुसपैठिए के मुद्दे पर ये भाग गए। 200 बार भी भागेंगे, हम किसी घुसपैठिए को नहीं छोड़ेंगे। लोकसभा में अमित शाह ने फिर से अपने भाषण के शेष भाग को पढ़ना शुरू कर दिया है।शाह ने अपनी बात रखते हुए नेहरू से लेकर अटल बिहारी वाजपेयी के समय तक के एसआईआर का जिक्र किया।

● शाह बोले- 16 हजार ईवीएम चेक हुए, एक भी गलत वोट नहीं पड़ा

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा– चुनाव आयोग को भी लगा कि आरोप सच और झूठ होते हैं। पांच साल रिसर्च के बाद सीसीटीवी लाया गया। इसका मतलब है कि मैंने कमल का निशान दबाया, तो पर्चा निकलती है, वोट कंफर्म होता है। आयोग ने तय कि 5 परसेंट ईवीएम के परिणाम और वीवीपीएटी मिलान होंगे।

राजीव गांधी के समय ईवीएम लाए गए, अब ये सवाल उठा रहे– गृह मंत्री अमित शाह ने कहा– 15 मार्च 1989 को राजीव गांधी के टाइम ईवीएम लाने का फैसला लिया गया। अब उस पर आरोप लगा रहे हैं। मेरे सामने के सभी लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ही जीती। तब ईवीएम की चर्चा नहीं हुई। 2009 में ईवीएम से चुनाव हुआ, ये जीते तो चुप्पी साधी। 2014 में हम जीते हो सवाल किए गए।

विपक्ष की राज्य सरकारें बीएलओ की मदद नहीं कर रहीं– गृह मंत्री अमित शाह बोले– विपक्ष की राज्य सरकारें बीएलओ की मदद नहीं कर रही हैं।

सीएम डॉ. यादव ने की लोक निर्माण विभाग की समीक्षा

हर सड़क, हर पुल, हर परियोजना- जनता के जीवन को सरल और सुरक्षित बनाने की हमारी संकल्पना : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने कहा है कि सड़कें केवल यातायात का माध्यम नहीं, बल्कि विकास, रोज़गार, स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रगति का आधार हैं। विभाग का उद्देश्य प्रत्येक निर्माण कार्य को सिर्फ एक तकनीकी परियोजना के रूप में नहीं, बल्कि जनता के जीवन स्तर को सुधारने वाले साधन के रूप में देखना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि गुणवत्ता, पारदर्शिता और नवाचार के साथ प्रत्येक परियोजना को समयबद्ध तरीके से पूरा करना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है, यही प्रयास 'लोक निर्माण से लोक कल्याण' की भावना को साकार करते हैं। यह निर्देश मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंत्रालय में लोक निर्माण विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान दिये।

मुख्यमंत्री डॉ यादव ने विभाग द्वारा 'लोक निर्माण से लोक कल्याण' की भावना को धरातल पर उतारने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश की आधारभूत संरचना का विकास ही जनकल्याण का आधार है और विभाग ने इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहा है। उन्होंने कहा कि हर सड़क, हर पुल, हर परियोजना जनता के जीवन को सरल और सुरक्षित बनाने की हमारी संकल्पना का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि मेट्रोपॉलिटन एरिया और समीपवर्ती क्षेत्रों में राजमार्गों का घनत्व बढ़ायें। पूरे प्रदेश को समावेशित कर समग्र विकास पर कार्य करें। उन्होंने कहा कि शीघ्र ही जबलपुर और ग्वालियर को भी मेट्रोपोलिटन क्षेत्र घोषित किया जाएगा। शहरी, ग्रामीण एवं औद्योगिक क्षेत्रों सभी को अधोसंरचना विकास का लाभ प्राप्त हो इस आधार पर प्रस्ताव की परिकल्पना की जाये। उन्होंने कहा कि राजमार्गों का घनत्व राष्ट्रीय स्तर के समीप ले जाने के लिए विज़न डॉक्यूमेंट के आधार पर प्रस्ताव तैयार करें। प्रस्ताव में स्थानीय मांगों और सुझावों को यथोचित स्थान दिया जाये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि अपर मुख्य सचिव क्षेत्रों के समग्र विकास अनुसार कार्ययोजना का निर्धारण करें।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि शहरी विकास की इंटीग्रेटेड पॉलिसी के निर्माण में लोक निर्माण विभाग को भी शामिल किया जाये। उन्होंने कहा कि अधोसंरचना विकास में पर्यावरण समन्वय का विशेष ध्यान रखा जाये। सतत संवहनीय विकास के लिए सूरत के डायमंड पार्क की तर्ज में भवनों का निर्माण ग्रीन बिल्डिंग संकल्पना पर किया जाये। बिजली और पानी की बचत सुनिश्चित की जाये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भवन निर्माण में वास्तु-विज्ञान का ध्यान रखा जाये। ताकि सूर्य की रोशनी, हवा अन्य प्राकृतिक संसाधनों का उचित उपयोग सुनिश्चित हो और ऊर्जा की बचत की जा सके।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि एक्सप्रेस-वे आधुनिक समय की मांग है। इन अधोसंरचनाओं के विकास में ग्रामीण क्षेत्र की सुविधाओं का ध्यान रखा जाये। आवश्यकतानुसार फ्लाई-ओवर, अंडर-पास, सर्विस लेन को प्रस्ताव में शामिल करें। बैठक में बताया गया कि सिंहस्थ-2028 के कार्य प्राथमिकता से किए जा रहे हैं। प्रस्तावित कार्यों की प्रशासनिक स्वीकृति जारी की जा चुकी है। दिसम्बर माह के अंत तक कार्य प्रारंभ हो जायेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने निर्देश दिए कि कार्यों को जून-2027 तक पूर्ण किया जाये। बैठक में बताया गया कि लोकपथ ऐप में प्राप्त 12 हज़ार 212 शिकायतों में से 12 हज़ार 166 का निराकरण किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने लोकपथ ऐप के उत्कृष्ट उपयोग की सराहना की। उन्होंने कहा कि लोकपथ ऐप में रियल टाइम सड़क की स्थिति को भी अपडेट किया जाये।

दिवाली को यूनेस्को ने विश्व धरोहर घोषित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। यूनेस्को ने दिवाली को अमूर्त विश्व धरोहर घोषित किया। यूनेस्को ने बुधवार को संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन की इंटैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज यानी अमूर्त विश्व धरोहर की सूची जारी की। इसमें घाना, जॉर्जिया, कांगो, इथियोपिया और मिस्र सहित कई देशों के सांस्कृतिक प्रतीक भी शामिल हैं। इस पर पीएम मोदी ने कहा, 'दिवाली हमारी सभ्यता की आत्मा है।' भारत की 15 अमूर्त विश्व धरोहर की सूची में शामिल हैं। इसमें दुर्गा पूजा, कुंभ मेला, वैदिक मंत्रोच्चार, रामलीला, छाऊ नृत्य भी शामिल हैं। ये फैसला उस समय आया है, जब दिल्ली में यूनेस्को की इंटर-गवर्नमेंटल कमेटी फॉर इंटैन्जिबल हेरिटेज की 20वीं बैठक की मेजबानी कर रही है।

पीएम मोदी बोले- दिवाली हमारी सभ्यता की आत्मा

इस त्योहार की वैश्विक लोकप्रियता में और भी वृद्धि होगी

पीएम नरेंद्र मोदी ने एक्स पर बधाई देते हुए लिखा, भारत और दुनियाभर के लोग उत्साहित हैं। हमारे लिए दिवाली, संस्कृति और प्रकृति से जुड़ी है। यह हमारी सभ्यता की आत्मा है। यह ज्ञान और धर्म का प्रतीक है। दीपावली को यूनेस्को की अमूर्त विरासत सूची में शामिल किए जाने से इस त्योहार की वैश्विक लोकप्रियता में और भी वृद्धि होगी। प्रभु श्री राम के आदर्श हमें शाश्वत रूप से मार्गदर्शन करते रहें।

पंजाब कांग्रेस में घमासान, सिद्धू अमृतसर पहुंचे

पत्नी बोलीं- राजा वड़िंग ने गुजरात में टिकट बेच महंगी गाड़ियां-जमीनें खरीदीं

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब कांग्रेस में मचे घमासान के बीच पूर्व क्रिकेटर व कांग्रेस नेता नवजोत सिद्धू मुंबई से अमृतसर लौट आए हैं। सिद्धू के लौटते ही उनके अमृतसर स्थित घर में समर्थक भी जुटने लगे हैं। उनकी टीम मेंबर के तौर पर साथ रहने वाले उनके घर के बाहर मौजूद हैं। उनकी पत्नी डॉ. नवजोत कौर सिद्धू को लेकर पंजाब कांग्रेस नेताओं में हड़कंप मचा हुआ है। नवजोत कौर ने कहा था कि सीएम बनने के लिए 500 करोड़ रुपए की अटैची चाहिए। कौर ने कांग्रेस प्रधान राजा वड़िंग, सांसद सुखजिंदर रंधावा, नेता विपक्ष प्रताप सिंह बाजवा के अलावा कई नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए। कौर ने ये भी कहा था कि अगर सिद्धू को सीएम चेहरा बनाएंगे तो ही वह एक्टिव पॉलिटिक्स में आएंगे। कौर की बयानबाजी के बाद कांग्रेस उन्हें सस्पेंड कर चुकी है। हालांकि कौर ने कहा कि वह राजा वड़िंग को प्रधान ही नहीं मानती। हालांकि सिद्धू ने अभी तक इस पूरे मामले पर कोई रिएक्शन नहीं दिया है।

सत्य नडेला बोले- भारत का एआई मॉडल कॉपी नहीं हो सकता

मुंबई । माइक्रोसॉफ्ट के चेयरमैन और सीईओ सत्य नडेला ने अडाणी ग्रुप के चेयरमैन गौतम अडाणी से मुलाकात की। दोनों ने टेक्नोलॉजी के भविष्य, खासकर एआई पर चर्चा की। अडाणी ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि नडेला से मिलना हमेशा सुखद होता है। उन्होंने आगे लिखा कि सत्य नडेला खुद जो एक्स ऐप्स बना रहे हैं, उसका डेमो भी दिखाया। यह देखकर लगा कि सचमुच के बड़े लीडर कितने हाथों–हाथ काम करते हैं। उनकी टेक्नोलॉजी के भविष्य वाली बातें बहुत कीमती हैं। जैसे–जैसे एआई का जमाना आ रहा है और फिजिकल–डिजिटल दुनिया एक हो रही है, हम 360° पार्टनरशिप बनाने के लिए बहुत उत्साहित हैं।

बिहार में '1 घर-1 मीटर' का नियम लागू

फ्री बिजली के लिए नहीं चलेगी चालाकी, दिखाने होंगे जमीन बंटवारे के कागजात

पटना (एजेंसी)। बिहार सरकार द्वारा 125 यूनिट बिजली मुफ्त दिए जाने की घोषणा के बाद बिजली कनेक्शन लेने वालों की होड़ सी लग गई है। बड़ी संख्या में उपभोक्ता यह सोचकर नया कनेक्शन लेने के लिए आवेदन करने लगे हैं कि अगर एक ही घर में दो-तीन या चार कनेक्शन हो जाएं, तो उन्हें 125 यूनिट के हिसाब से अधिक फ्री बिजली मिल जाएगी। इसी सोच के तहत कई लोग अलग-अलग परिवार के सदस्यों के नाम से एक ही मकान के लिए नये कनेक्शन का आवेदन कर रहे हैं।

नया कनेक्शन लेने से बचते थे लोग– पहले स्थिति इसके उलट थी। लोग नया कनेक्शन लेने से बचते थे क्योंकि जितनी बिजली खपत होती थी, उतना बिल तो देना ही पड़ता था। साथ ही मीटर की संख्या बढ़ने पर फिक्स चार्ज भी बढ़ जाता था।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 27 °c
न्यूनतम 23°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ गुरुवार, 11 दिसंबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

सागर में लैंडिंग के दौरान ट्रेनी विमान क्रैश, फिसलकर रफ एरिया में पहुंचा

सागर (नप्र)। मध्य प्रदेश के सागर जिले के ढाना स्थित एयर स्ट्रिप पर बुधवार दोपहर में लैंडिंग के दौरान एक ट्रेनी विमान क्रैश हो गया। विमान के ब्रेक न लगने से वह रनवे से फिसलकर रफ एरिया में चला गया। विमान के रुकते ही वह डिसबैलेंस होकर एक तरफ झुक गया। हालांकि हादसे में पायलट पूरी तरह सुरक्षित हैं।

जानकारी अनुसार सागर के ढाना हवाई पट्टी पर बुधवार प्रशिक्षु विमान उतरते समय हादसे का शिकार हो गया। डबल सीटर सेसना विमान ने जैसे ही लैंडिंग के दौरान रनवे को छुआ तो उसके ब्रेक नहीं लगे। वह रनवे पर फिसलते हुए तय एरिया से आगे बढ़कर रफ एरिया में पहुंच गया। यहां विमान एक झटके से रुका और उसका संतुलन बिगड़ गया। वह एक तरफ झुका और उसकी नोज जमीन से टकरा गई। हादसे में विमान में हल्की टूट–फूट की जानकारी दी जा रही है।

विमान हादसे के दौरान रनवे पर एयर एंबुलेंस मौजूद थी– बता दें कि जब ट्रेनी विमान हादसे का शिकार हुआ उस समय रनवे पर एक एयर-एंबुलेंस भी मौजूद थी। एयर एंबुलेंस से बीडीएस के एक घायल जवान को एयर लिफ्ट कर मुंबई भेजा जाना था। इसी दौरान रनवे पर प्रशिक्षु विमान उतरते समय हादसे का शिकार हो गया

विमान को देख स्टाफ दौड़ पड़ा पायलट को निकाला

ढाना एयर स्ट्रिप पर जैसे ही विमान रफ एरिया में पहुंचकर डिसबैलेंस हुआ, उस समय रनवे पर काफी लोग मौजूद थे। स्टाफ में विमान को झुकते देख हड़कंप मच गया और पूरा स्टाफ विमान की तरफ दौड़ पड़ा। स्टाफ ने पायलट को विमान से सुरक्षित बाहर निकाला और तत्काल एंबुलेंस से अस्पताल भेजा। फायर लॉरी को भी तत्काल एक्टिव कर दिया गया था। हालांकि शुक्र रहा कि कोई हादसा नहीं हुआ।

बच्ची से निर्भया जैसी दरिंदगी, प्राइवेट पार्ट में रॉड घोंपी

आलीराजपुर के युवक ने गुजरात में की रेप की वारदात, खींचकर झाड़ियों में ले गया

आलीराजपुर (नप्र)। गुजरात के राजकोट जिले के आटकोट के पास कानपर गांव की सीमा में दिल्ली निर्भया कांड जैसी बेहद क्रूर और अमानवीय घटना सामने आई है। खेत में खेल रही 6 साल की मासूम बच्ची को एक खेत मजदूर झाड़ियों में खींच ले गया। दुष्कर्म के बाद उसके साथ की हैवानियत की सारी हदें पार कर दीं। आरोपी मध्यप्रदेश के आलीराजपुर का रहने वाला है। घटना के कुछ ही घंटों में पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी के खिलाफ गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया गया है। पुलिस 7 दिन की रिमांड के लिए कोर्ट में उसे पेश करेगी।

10 संदिग्धों की लाइनअप, बच्ची ने आरोपी को पहचाना– राजकोट ग्रामीण एसपी विजय सिंह गुर्जर के मुताबिक पीड़िता मूल रूप से दाहोद जिले की रहने वाली है। परिवार खेतों में मजदूरी करता है। आरोपी ने दुष्कर्म के बाद बच्ची के प्राइवेट पार्ट में रॉड घोंप दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गई। बच्ची दर्द से कराहती रही, लेकिन आरोपी उसे वहीं लहूलुहान हालत में छोड़कर फरार हो गया।

पुलिस ने 10 टीम बनाकर 10 किलोमीटर के दायरे में लगे सीसीटीवी खंगाले। 10 संदिग्ध सामने आए। चाइल्ड काउंसलर, महिला पुलिस और डॉक्टर की मौजूदगी में बच्ची ने आरोपी रामसिंह तेजसिंह की पहचान की।

4 दिसंबर को क्या हुआ था?– आरोपी पास के खेत में मजदूरी करता था। उसी खेत में पीड़िता के मामा-मामी भी काम करते थे। दोपहर करीब 12 बजे बच्चे खेल रहे थे। आरोपी ने बच्ची को चॉकलेट का लालच देकर पानी की टंकी के पीछे ले गया। रेप की कोशिश असफल होने पर उसने प्राइवेट पार्ट में रॉड घोंप दी। बच्ची की हालत बिगड़ते ही वह भाग निकला। परिजनों ने बच्ची को अस्पताल में भर्ती कराया, तब पुलिस को सूचना दी गई।

आरोपी खुद 13 साल की बेटी का पिता– आरोपी रामसिंह (30) मध्यप्रदेश के अलीराजपुर का निवासी है। उसके दो बेटे और एक 13 साल की बेटी है। घटनास्थल से एफएसएल टीम ने साक्ष्य जुटाए हैं। पीड़िता का मेडिकल कराया गया है। सरकार के निर्देश हैं कि जल्द चार्जशीट दाखिल कर सख्त सजा दिलाई जाए।

मन में अचानक आई विकृति, कोई पूर्व योजना नहीं– पुलिस के अनुसार आरोपी ने पहले से कोई योजना नहीं बनाई थी। बच्ची को देखकर उसमें अचानक विकृति उत्पन्न हुई। आरोपी का कोई आपराधिक रिकॉर्ड नहीं मिला है। फिलहाल पॉक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज किया गया है, मेडिकल रिपोर्ट के आधार पर और धाराएं जुड़ सकती हैं।

घटना 4 दिसंबर की, मामला अब क्यों सामने आया?– शुरुआत में परिजनों को लगा कि बच्ची खेलते समय गिर गई है। अस्पताल में इलाज चलने के दौरान 24 घंटे महिला कॉन्स्टेबल तैनात रही। जब डॉक्टरों ने पुष्टि की कि बच्ची के साथ यौन उत्पीड़न हुआ है, तब एफआईआर दर्ज की गई। घटना के बाद आटकोट और आसपास के इलाकों में आक्रोश फैल गया है। लोग दोषी को फांसी जैसी सख्त सजा देने की मांग कर रहे हैं।

पुलिस पूछताछ में आरोपी ने कबूला जुर्म– पुलिस पूछताछ में आरोपी ने स्वीकार किया कि उसने बच्ची के साथ दुष्कर्म का प्रयास किया। जब बच्ची ने विरोध किया तो उसने रॉड घोंप दी। आरोपी ने बच्ची का मुंह दबाकर वारदात को अंजाम दिया।

पूर्वांचल एक्सप्रेस- वे पर हजारों कपल के प्राइवेट वीडियो बने

टोल मैनेजर का कबूलनामा; अब तक 4 कर्मचारियों को हटाया

सुलतानपुर (एजेंसी)। यूपी के पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर कार में कपल के रोमांस का सीसीटीवी से वीडियो बनाने का मामला सामने आया था। इसमें 'एंटी ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम' (एटीएमएस) के पूर्व मैनेजर आशुतोष सरकार को गिरफ्तार किया गया था। उसने पुलिस को अलग ही कहानी बताई।

उसने बताया- ढाई साल में इस तरह के हजारों मामले (वीडियो सीसीटीवी में रिकॉर्ड) सामने आए, लेकिन उसने एक भी वीडियो वायरल नहीं किया। जो वीडियो वायरल हुआ, उसे टोल पर काम करने वाले एक पूर्व कर्मचारी ने किसी ड्राइवर को दिया था। इधर, एंटी ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम का काम देखने वाली ठेका

कंपनी ने आशुतोष सरकार के अलावा सिस्टम टेक्नीशियन आशुतोष तिवारी, ट्रैफिक मैनेजर शशांक शेखर और सिस्टम इंजीनियर प्रमोद कुमार को नौकरी से निकाल दिया है।

चारों के खिलाफ एफआईआर करने के लिए पुलिस को लेटर भी लिखा है। मंगलवार रात आईजी अयोध्या, एसपी सुल्तानपुर और यूपीडा के अफसर मौके पर पहुंचे और टोल कर्मचारियों से पूछताछ की। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर 93 किमी के पास कार में रोमांस करते नवविवाहित दंपती का वीडियो सीसीटीवी से रिकॉर्ड किया गया था।

शशि थरूर ने वीर सावरकर अवॉर्ड लेने से इनकार किया

- बोले-आयोजकों ने बिना पूछे नाम घोषित किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने बुधवार को एक्स पर एक पोस्ट में वीर सावरकर अवॉर्ड को लेकर स्पष्टीकरण जारी किया। उन्होंने कहा– मैं ये अवॉर्ड लेने नहीं जा रहा हूं। मुझे इसके

बारे में केरल में रहते हुए मीडिया रिपोर्ट्स से ही जानकारी मिली। कांग्रेस सांसद ने कहा कि आयोजकों ने बिना पूछे मेरा नाम घोषित किया है। ऐसे में दिल्ली में होने वाले कार्यक्रम में शामिल होने का सवाल ही नहीं उठता। वहीं, अवॉर्ड देने वाले एनजीओ ने थरूर के दावे को गलत बताया। दि हिंगरेज रूरल डेवलपमेंट सोसाइटी इंडिया के संस्थापक अजी कृष्णन ने दावा किया कि वे एक महीने पहले थरूर से उनके घर पर मिले थे।

दिल्ली हाईकोर्ट बोला- इंडिगो फेल हुई तो सरकार ने क्या किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिगो संकट पर दिल्ली हाईकोर्ट ने बुधवार को केंद्र सरकार को फटकार लगाई। अदालत ने पूछा कि जब एयरलाइन फेल हो गई थी, तब सरकार ने क्या किया। कैसे फ्लाइट्स की टिकट की कीमतें 4-5 हजार रुपए से बढ़कर 30,000 रुपए तक कैसे पहुंच गईं। अन्य एयरलाइंस ने इसका फायदा कैसे उठाया। आपने क्या कार्रवाई की? आपने ही स्थिति को इस हाल तक पहुंचने दिया।

मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और जस्टिस तुषार राव गेदेला की डिविजन बेंच जनहित याचिका (पीआईएल) की सुनवाई कर रही थी। इसमें मांग की गई थी कि इंडिगो संकट की स्वतंत्र न्यायिक जांच की जाए और जिन लोगों की फ्लाइट रद्द हुई या जो एयरपोर्ट पर फंसे उन्हें मुआवजा दिया जाए।

बैतूल के कारीगर बलदेव वाघमारे को मिला राष्ट्रपति से अवॉर्ड

भोपाल/बैतूल (नप्र)। जिले के शिल्पकार बलदेव वाघमारे को राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने नई दिल्ली में राष्ट्रीय हस्तशिल्प पुरस्कार से सम्मानित किया है। यह सम्मान उन्हें आदिवासी भरेवा शिल्प के क्षेत्र में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए दिया गया है। यह पुरस्कार भरेवा शिल्प को राष्ट्रीय पहचान दिलाता है, जिसे हाल ही में जीआई टैग भी मिला है।

कौन हैं बलदेव वाघमारे– बलदेव वाघमारे, जो बैतूल जिले के हैं, पारंपरिक जनजातीय भरेवा शिल्प के जाने-माने कारीगर हैं। यह शिल्प गोंड समुदाय की एक उप-जनजाति से जुड़ा है। भरेवा कलाकार देवताओं के प्रतीकात्मक चित्र बनाते हैं। वे अंगूठियां और खंजर जैसे आभूषण भी बनाते हैं, जो गोंड परिवारों में शादी-ब्याह के रीति-रिवाजों के लिए बहुत जरूरी होते हैं। कुछ खास आभूषण, जैसे कलाईबंद और बाजूबंद, आध्यात्मिक गुरुओं या पारंपरिक चिकित्सकों के लिए बनाए जाते हैं।

देश में चुनिंदा कारीगर– भरेवा शिल्प के कारीगरों की संख्या कम हो रही थी, लेकिन बलदेव वाघमारे ने इस गिरावट को रोकने में अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने बैलगाड़ी, मोर के आकार के दीपक, घंटियां और पायल जैसी सजावटी चीजें बनाई हैं। इन कलाकृतियों ने भरेवा शिल्प को अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी पहचान दिलाई है।

क्या होता है भरेवा का अर्थ– स्थानीय भाषा में 'भरेवा' का मतलब 'भरने वाले' होता है। यह शिल्प गोंड समुदाय की परंपराओं और कौशल का एक अनूठा संगम है। वाघमारे ने बैतूल के टिगरिया गांव को एक 'शिल्प गांव' में बदल दिया है। यहां भरेवा परिवार इस पारंपरिक कला को जिंदा रखे हुए हैं। भरेवा लोग भगवान शिव और देवी पार्वती की मूर्तियां बनाने में माहिर हैं, क्योंकि वे गोंड समुदाय के धार्मिक रीति-रिवाजों को अच्छी तरह जानते हैं।

कंगना रनोट बोलीं- पीएम मोदी दिलों को हैक करते हैं ईवीएम को नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के शीतकालीन सत्र के 8वें दिन बुधवार को लोकसभा और राज्यसभा में कार्यवाही जारी है। लोकसभा में चुनाव सुधार और एसआईआर पर चर्चा जारी है। भाजपा सांसद कंगना रनोट ने कहा विपक्ष ईवीएम हैक करने की बात करता है ये भूल गए हैं कि पीएम नरेंद्र मोदी दिलों को हैक करते हैं। वहीं सपा की डिंपल यादव ने कहा कि सरकार एसआईआर के जरिए एनआरसी लागू कर रही है।

कंगना बोलीं– एक देश एक चुनाव लागू किया जाए– भाजपा सांसद कंगना रनोट ने विपक्ष पर हमला बोलते हुए कहा कि ये हर दिन एसआईआर, एसआईआर कर हंगामा कर रहे थे। दिल दहल जाता था इनको देखकर। कल राहुल गांधी जी जब बोल रहे थे, बार-बार वही खादी में धागा है, धागे से कपड़ा है, करते रहे।

हनुमानगढ़ में बवाल, किसानों-पुलिस में झड़प

- गाड़ियों में आग लगाई, आंसू गैस के गोले दागे

हनुमानगढ़ (एजेंसी)। हनुमानगढ़ में पुलिस और किसानों में झड़प हो गई। किसानों ने ट्रैक्टरों से निर्माणाधीन एथेनॉल फैक्ट्री की दीवार को तोड़ दिया। पुलिस ने लाठीचार्ज किया। किसानों ने कई गाड़ियों में तोड़फोड़ की और आग लगा दी। पुलिस ने भीड़ को काबू में करने के लिए आंसू गैस के गोले दागे। मामला टिब्बी इलाके के राठी खेड़ा गांव का बुधवार का है। किसान के समर्थन में पहुंचे कांग्रेस विधायक अभिमन्यु पूनिया लाठीचार्ज में घायल हो गए। उन्हें हनुमानगढ़ जिला अस्पताल ले जाया गया। प्रशासन ने टिब्बी कस्बे और आसपास के गांवों में इंटरनेट बंद कर दिया। स्कूल और दुकानें भी बंद है। इससे पहले फैक्ट्री के विरोध में बुधवार को किसानों ने एसडीएम कार्यालय के सामने सभा की।

एमपी-राजस्थान में शीत लहर 43 शहरों में पारा 10 डिग्री से कम

- हिमाचल के शिंकुला दर्रा में बर्फबारी, यूपी-बिहार के 30 जिलों में घना कोहरा

उत्तराखंड में बर्फबारी के बाद बना 10 फीट ऊंचा शिवलिंग

नई दिल्ली/भोपाल/लखनऊ/देहरादून/जयपुर (एजेंसी)। पहाड़ी राज्यों में बर्फबारी के बीच मैदानी इलाकों में सर्दी बढ़ने लगी है। मध्य प्रदेश में अगले 2 दिन शीतलहर का अलर्ट है। बीती रात प्रदेश में सबसे कम तापमान शहडोल के कल्याणपुर में 4.7 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं, इंदौर समेत 25 शहरों में पारा 10 डिग्री से कम रहा।

वहीं, राजस्थान में कड़ाके की सर्दी पड़ रही है। प्रदेश में 10 दिसंबर तक कोल्ड वेव का असर रहेगा। 18 से ज्यादा शहरों में न्यूनतम तापमान सिंगल डिजिट में रहा। सबसे कम तापमान फतेहपुर में 3.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

इधर उत्तर प्रदेश में बाराबंकी, गोंडा समेत 20 जिलों में बुधवार सुबह भी घना कोहरा छाया रहा। कई जगहों पर विजिबिलिटी शून्य रही। वहीं, बिहार के 10 जिलों में भी कोहरे से विजिबिलिटी जीरो रही। हिमाचल के लाहौल स्पीति जिला के शिंकुला दर्रा में बर्फबारी हुई। शिंकुला टॉप पर 6 इंच तक बर्फ पड़ी। तापमान में 3-4 डिग्री तक की गिरावट आई है।

चमोली में प्राकृतिक रूप से बर्फ से बने शिवलिंग के रूप में महादेव विराजमान हैं– उत्तराखंड के चमोली जिले में चीन सीमा से सटा टिम्मरसैंण महादेव एक रहस्यमय और अद्भुत स्थल है। यहां प्राकृतिक रूप से बर्फ से बने शिवलिंग के रूप में महादेव विराजमान हैं, जो अमरनाथ की गुफा में बर्फीले बाबा के समान दिखाई देते हैं। दिसंबर से मार्च तक यहां बर्फ से शिवलिंग का निर्माण होता है, जिस पर पहाड़ से लगातार जलधारा गिरती रहती है। यह दृश्य श्रद्धालुओं को अमरनाथ की याद दिलाता है और एक अनूठा आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है।

- पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर भीषण हादसा- टक्कर के बाद कार में लगी आग

पांच लोगों की जलकर मौत

बाराबंकी (एजेंसी)। पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर सड़क किनारे खड़ी वैगन आर कार में तेज रफ्तार ब्रीजा कार ने टक्कर मार दी। घटना के समय वैगन आर कार सवार कुछ लोग बाहर खड़े थे, जबकि कुछ अंदर बैठे थे। टक्कर इतनी तेज थी कि वैगन आर करीब दो सौ मीटर दूर जाकर रुकी और उसमें आग लग गई।

हादसे में वैगन आर में सवार पांच लोगों की मौत हो गई, जिनमें दो बच्चे शामिल हैं। वहीं, ब्रीजा कार के चार लोग घायल होना बताए जा रहे हैं। यह हादसा सुबेहा थाना के रतौली ढीह पर पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर प्वाइंट 51.6 पर हुआ। स्थानीय लोगों ने घायलों को बाहर निकाला और पुलिस को सूचना दी। मृतकों की पहचान नहीं हो सकी है। वहीं, घायलों का सीएचसी हैदरगढ़ में उपचार चल रहा है।

राहुल संसद सत्र के बीच जर्मनी जाएंगे

- भाजपा बोली-उनके लिए एलओपी मतलब लीडर ऑफ पर्यटन, प्रियंका का जवाब- पीएम भी आधे समय विदेश में रहते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की आगामी जर्मनी यात्रा को लेकर राजनीति तेज हो गई है। भाजपा ने बुधवार को संसद के शीतकालीन सत्र के बीच राहुल की विदेश यात्रा को लेकर उनकी आलोचना की है।

भाजपा नेता शहजाद पूनावाला ने कहा- राहुल गांधी ने एक बार फिर साबित कर दिया है कि 'एलओपी' का मतलब 'लीडर ऑफ पर्यटन' होता है। वे लीडर ऑफ पार्टीइंग (पार्टी करने वाले नेता हैं)। संसद सत्र 19 दिसंबर तक चलेगा, फिर भी राहुल 15 से 20 दिसंबर तक जर्मनी में रहेंगे। वहीं, कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने राहुल गांधी का बचाव करते हुए कहा- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने काम का आधा समय विदेश में बिताते हैं।

जगदीशपुर में 'इस्लाम नगर' शब्द पर पोती कालिख

22 महीने पहले बदल चुका नाम, पर पुराना बोर्ड नहीं हटा, हिंदू संगठनों ने जताई नाराजगी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के जगदीशपुर में 'इस्लाम नगर' लिखने पर पिछले दो दिन से हंगामे की स्थिति बन रही है। बुधवार को फिर से हिंदू संगठन के पदाधिकारी जगदीशपुर पहुंचे। उन्होंने 'इस्लाम नगर' लिखे शब्दों पर कालिख पोत दी और जगदीशपुर के बैनर लगा दिए। 22 महीने पहले सरकार भी इस्लाम नगर का नाम बदलकर जगदीशपुर कर चुकी है, लेकिन कई बोर्ड पर अब तक इस्लाम नगर ही नाम है।

हिंदू उत्सव समिति अध्यक्ष चंद्रशेखर तिवारी समेत कई लोग बुधवार सुबह जगदीशपुर पहुंचे। यहां जिन बोर्ड पर 'इस्लाम नगर' लिखा था, उस पर काली स्याही पोत दी गई। इस दौरान जमकर नारेबाजी भी हुई। अध्यक्ष तिवारी ने बताया कि करीब दो साल से जगदीशनगर नाम नहीं लिखा गया। यह पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और सरकार के आदेश की अवहेलना है। गजट

नोटिफिकेशन तक जारी हो चुका है। वर्तमान मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी यहां आ चुके हैं।

बावजूद अब तक मुख्य गेट से इस्लाम नगर नहीं हटा और न ही जगदीशपुर लिखा गया है। इसके अलावा किलोमीटर का पत्थर भी क्षतिग्रस्त कर दिया गया। यह बर्दाश्त नहीं करेंगे। दोषियों पर कार्रवाई हो और हर बोर्ड पर जगदीशपुर लिखा गया। अध्यक्ष तिवारी ने मौके से ही पीडब्ल्यूडी के अधिकारियों से बात की। कहा कि बोर्ड से नाम नहीं बदला गया तो उग्र प्रदर्शन करेंगे।

31 जनवरी 23 तक नाम इस्लाम नगर था- भोपाल से 14 किलोमीटर दूर ऐतिहासिक धरोहर को समेटे खूबसूरत गांव जगदीशपुर है। 17वीं शताब्दी में बने किले को देखने यहां देश-दुनिया के लोग पहुंचते हैं। 31 जनवरी 2023 तक इसका नाम इस्लाम नगर था, जबकि 1 फरवरी 23 से यह फिर से अपने पुराने नाम जगदीशपुर से पहचाना जाने लगा है।

केंद्र सरकार ने गांव का नाम जगदीशपुर करने की हरी झंडी दी थी। राज्य सरकार ने भी नोटिफिकेशन जारी कर गांव का नाम बदलकर जगदीशपुर कर दिया था।इस्लाम नगर का नाम जगदीशपुर होने पर वहां के लोगों ने जमकर जश्न मनाया था। इस दौरान गांव के लोगों ने आतिशबाजी की। एक-दूसरे को मिठाई खिलाई और बधाई दी थी। साथ ही ढोल ही नगाड़ों की थाप पर झूमते नजर आए थे।

कई महीनों तक बोर्ड नहीं बदले

इस्लामनगर का नाम जगदीशपुर होने के बावजूद कई महीनों तक यहां बोर्ड नहीं बदले गए थे। विरोध और हंगामे के बाद बोर्ड बदले गए, लेकिन मंगलवार को लांबाखेड़ा-जगदीशपुर मार्ग पर लगे कई संकेतक बोर्डों पर जगदीशपुर की जगह इस्लाम नगर लिखे जाने और एक मस्जिद के समीप स्थित किलोमीटर मीटर बोर्ड के क्षतिग्रस्त पाए जाने की घटना ने स्थानीय क्षेत्र में भारी आक्रोश पैदा कर दिया था।

बड़ी संख्या में स्थानीय लोग और हिंदू संगठनों ने मौके पर पहुंचकर इस कृत्य के खिलाफ जोरदार विरोध प्रदर्शन किया था। बुधवार को फिर से लोग मौके पर पहुंचे और बोर्ड से नाम हटाए। मौके पर पहुंचे अध्यक्ष तिवारी, देवलखेड़ी सरपंच अजय सैनी, राजेश शर्मा ने कहा कि क्षेत्र के ऐतिहासिक और मूल नाम से छेड़छाड़ किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं है। यह केवल नाम बदलने का मुद्दा नहीं, बल्कि जनभावनाओं से खिलवाड़ है।

प्रदर्शनकारियों की यह मांग

- सभी बोर्डों को मूल नाम 'जगदीशपुर' में तत्काल बहाल किया जाए।
- क्षतिग्रस्त किलोमीटर मीटर बोर्ड की मरम्मत की जाए।
- प्रकरण की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए।

भोपाल में घुसे 2 संदिग्ध बांग्लादेशी फर्जी पासपोर्ट बनाकर हुए 'गायब'

इंटेलिजेंस कर रही 'लापता' भाइयों की तलाश

भोपाल (नप्र)। संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिकों द्वारा नकली डॉक्यूमेंट्स का इस्तेमाल करके धोखाधड़ी से भारतीय पासपोर्ट हासिल करने का मामला सामने आया है। जांच के बाद, कोलार पुलिस ने सोमवार को दो भाइयों के खिलाफ धोखाधड़ी के आरोप में केस दर्ज किया और उन्हें ट्रेस करने की कोशिश शुरू की। उनकी अभी की लोकेशन पता नहीं है। अधिकारियों ने बताया कि यह मामला तब सामने आया जब हाल ही में एक इंटेलिजेंस एजेंसी ने उनके पासपोर्ट के वेरिफिकेशन के लिए एक लेटर भेजा, जिसके बाद पुलिस ने कार्रवाई की।

पासपोर्ट ऑफिस को हुआ शक- संदिग्ध बांग्लादेशी नागरिक मोहम्मद रिहान अंसारी और मोहम्मद मकबूल अंसारी पिता सफकूल हक अंसारी ने भोपाल के कोलार रोड स्थित राजवैद्य कालोनी के पते का उल्लेख कर भारतीय पासपोर्ट बनवाया था। पासपोर्ट कार्यालय को संदेह होने पर इंटेलिजेंस को इसकी जानकारी दी गई। इंटेलिजेंस की ओर से कोलार थाना क्षेत्र की सहायक पुलिस आयुक्त अंजली रघुवंशी को जांच के लिए

2014 में कराया था रेंट एग्रीमेंट

जांच के दौरान यह पता चला कि दोनों आरोपितों ने सात अगस्त 2014 को राजवैद्य कालोनी निवासी लक्ष्मी ठाकुर के पते पर किरायेदारी का अनुबंध पत्र बनवाया था। इसी आधार पर उन्होंने आधार कार्ड और मतदाता पत्र बनवाए। इन दस्तावेजों का उपयोग करके उन्होंने पासपोर्ट के लिए आवेदन किया था।

पत्र भेजा गया।

उस मकान में कभी रहे ही नहीं दोनों- जांच में यह बात सामने आई कि दोनों आरोपित उस मकान में कभी रहे ही नहीं। मकान मालिक के बयानों ने भी इस बात की पुष्टि की है। इस पर दोनों आरोपितों के खिलाफ धोखाधड़ी और पासपोर्ट अधिनियम की धाराओं में एफआईआर दर्ज की गई है। दोनों ही पासपोर्ट लेने के बाद से गायब हैं और उनका पता लगाने के लिए पुलिस प्रयास कर रही है। भोपाल के पुलिस उपायुक्त मयूर खंडेलवाल ने कहा कि दोनों का पता लगाया जा रहा है।

'मिशनरी स्कूल में बच्चा बन गया ईसाई, घर में रखी मूर्तियां तोड़ीं'

फादर और लेडी टीचर पर ब्रेन वॉश का आरोप

थाने में पिता के साथ पहुंचे हिंदू संगठन के लोग

जबलपुर (नप्र)। एक मिशनरी स्कूल पर धर्मांतरण का आरोप लगा है। बच्चे के पिता ने हिंदू संगठनों के साथ थाने पहुंचकर इसकी शिकायत दी है। आरोप लगाया है कि फादर और टीचर ने उसका ब्रेनवाश किया है। इसके बाद वह ईसाई बन गया है। बेटा अब चर्च जाने लगा है। हिंदू संगठन के लोगों ने स्कूल पर कार्रवाई की मांग की है।

कहना है कि फादर और टीचर के संपर्क में आने के बाद ही मेरा बेटा पूरी तरह से बदला है। अब वह कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

राष्ट्रीय बजरंग दल की प्रांत अध्यक्ष प्रीति धनधारिया ने बताया कि नीलम शर्मा के पिता उनके पास आए थे और उन्होंने पूरी घटना बताई। उन्होंने कहा कि सेंट जेवियर स्कूल में उनका बेटा पढ़ता है,

सेंट जेवियर मिशनरी स्कूल में पढ़ता है बेटा- आधारताल निवासी सत्यनारायण शर्मा के बेटे का नाम नीलम है। वह सेंट जेवियर मिशनरी स्कूल में पढ़ता है। साथ ही नीट की तैयारी कर रहा है। पिता का आरोप है कि स्कूल में दो फादर और एक टीचर ने उनके बेटे का ब्रेनवॉश किया है। साथ ही ईसाई धर्म अपनाने के लिए प्रेरित किया है। इसके बाद से बेटे ने चर्च जाना शुरू कर दिया है। घर में रखी हिंदू देवी-देवताओं की मूर्ति को तोड़ता है।

प्रभु यीशु के गाने बजाता- पिता का आरोप है कि बेटा घर में प्रभु यीशु के गाने बजाता है। उनका लेकिन वहां की महिला टीचर पलक सिंह और फादर ने उसका ब्रेनवॉश करके उसे ईसाई धर्म अपनाने के लिए उकसाया। इसके बाद छात्र पूरी तरह से क्रिश्चियन बन गया है।

प्रीति धनधारिया ने यह भी बताया कि छात्र अपने माता-पिता के साथ मारपीट भी करता है। इतना ही नहीं, छात्र नीलम अपने माता-पिता पर भी ईसाई धर्म अपनाने का दबाव बना रहा है। प्रीति धनधारिया ने महिला टीचर और फादरों की जांच कर कार्रवाई की मांग की है। उन्होंने कहा कि पुलिस इसकी जांच करे कि स्कूल में सिर्फ हिंदू बच्चों को ही क्यों टारगेट किया जा रहा है।

प्रदेश में रेयर अर्थ मिनरल की खोज हुई तेज

आईआईएसईआर ने शुरू किया खनिज परीक्षण

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में रेयर अर्थ मिनरल्स और दूसरे महत्वपूर्ण खनिजों के वैज्ञानिक अन्वेषण तेज हो गई है। इसके लिये खनिज संसाधन विभाग और भारतीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (आईआईएसईआर) के बीच कटनी में आयोजितमाइनिंग कॉन्क्लेव के दौरान हुए एमओयू का क्रियान्वयन प्रारंभहो गया है। प्रथम चरण में कटनी और जबलपुर जिलों से प्राप्त खनिज नमूने आईआईएसईआर के वैज्ञानिकों को सौंपे गए हैं।

प्रमुख सचिवखनिज संसाधन श्री उमाकांत उमराव और डीजीएम श्री फैंक नोबल ए. ने आईआईएसईआरटीम को कटनी और जबलपुर जिलों के खदानों से संभावित रेयर अर्थ मिनरल्स के नमूने उपलब्ध कराये हैं। आईआईएसईआर के वैज्ञानिक इन नमूनों का उच्च स्तरीय प्रयोगशाला में विश्लेषण करेंगे। प्रथम चरण में विश्लेषण महाकौशल क्षेत्र में उपलब्ध

रेयर अर्थ मिनरल्स और स्वर्ण की संभावनाओं पर केंद्रित रहेगा।

खनिज साधन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि आईआईएसईआर के साथ यह सहयोग राज्य की वैज्ञानिक अन्वेषण क्षमता को सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इससे राज्य को उच्च गुणवत्ता वाले भू-वैज्ञानिक आंकड़े प्राप्त होंगे, आगामी अन्वेषण कार्यक्रमों को दिशा मिलेगी तथा रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण खनिजों के नए भंडार चिन्हित करने में सहायता मिलेगी। राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर महत्त्वपूर्ण खनिजों की बढ़ती मांग को देखते हुए यह पहल मध्यप्रदेश को खनिज आधारित आर्थिक विकास के उभरते केंद्र के रूप में स्थापित करने में सहायक सिद्ध होगी।

कुर्सी पर बैठा था, कुछ सेकंड में सब खत्म इंदौर में फाइनेंस एजेंट को हार्ट अटैक, सीसीटीवी में कैद हुई आखिरी सांसें

इंदौर (एजेंसी)। भंवरकुआं क्षेत्र में एक दर्दनाक हादसा सामने आया, जहां इलेक्ट्रॉनिक्स और मोबाइल फाइनेंस का काम करने वाले एक युवक की अचानक हार्ट अटैक से मौत हो गई। घटना दुकान के अंदर लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई, जिसका वीडियो बुधवार को सामने आया। फुटेज में युवक अचानक कुर्सी से नीचे गिरता दिखाई देता है और फिर उठ नहीं पाता।

दुकान में बेहोश होकर गिर पड़ा- मृतक की पहचान 31 वर्षीय शिवनारायण मालवीय निवासी मूसाखेड़ी के रूप में हुई है। वह इंदौर में तीन ईमली चौराहे के पास स्थित अजय इंटरप्राइजेस मोबाइल स्टोर पर एक निजी फाइनेंस कंपनी के लिए काम करता था। रोज की तरह वह दुकान पहुंचा था और ग्राहकों का काम कर रहा था। इसी दौरान वह अचानक बेहोश होकर नीचे गिर पड़ा।

डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया- दुकान कर्मचारियों ने तत्काल उसे नजदीकी अस्पताल पहुंचाया जहां डॉक्टरों ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस के शुरुआती जांच में हार्ट अटैक की आशंका जताई गई है। हालांकि अंतिम पुष्टि पोस्टमॉर्ट्म रिपोर्ट आने के बाद ही होगी।

दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के ब्रोशर का विमोचन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंत्रालय में दत्तोपंत ठेंगड़ी शोध संस्थान के ब्रोशर 'एनआरएम-2026' का विमोचन किया। नेशनल रिसचर्स मीट-2026 का आयोजन 12 से 14 फरवरी को भोपाल में होगा। ब्रोशर विमोचन पर संस्थान के निदेशक डॉ. मुकेश मिश्रा, माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के कुलपति श्री विजय मनोहर तिवारी और वीर भारत न्यास के ट्रस्टी श्री श्रीराम तिवारी मौजूद रहे।

समाज के हर वर्ग, हर व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा सभी की साझा जिम्मेदारी : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने 'विश्व मानवाधिकार दिवस' पर समाज में मानवता, समानता और न्याय के लिए सामूहिक संकल्प लेने का आह्वान किया है। उन्होंने कहा कि समाज के हर वर्ग और हर व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करना हम सभी की साझा जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि मानवाधिकार दिवस पर हमें सह-अस्तित्व की भावना को सुदृढ़ करते हुए एक-दूसरे के सम्मान, शांति और अधिकारों को अक्षुण्ण रखने का संकल्प लेना चाहिए।

मुख्यमंत्री का दमोह के जनप्रतिनिधियों ने माना आभार

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का दमोह के जनप्रतिनिधियों ने बुंदेलखंड सहित दमोह जिले को दी गई अभूतपूर्व सौगातों के लिए जनता की ओर से आभार व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव से मंत्रालय में भेंट कर दमोह के जनप्रतिनिधि श्री श्याम शिवहरे ने अन्य जनप्रतिनिधियों के साथ मिलकर आभार व्यक्त किया। उन्होंने बताया कि खजुराहो में मुख्यमंत्री डॉ. यादव की अध्यक्षता में हुई मंत्रि-परिषद की बैठक में सागर से दमोह के 76 किलोमीटर फोर लेन सड़क मार्ग के लिए 2059 करोड़ रुपए की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई। इसके अतिरिक्त दमोह के तेंदूखेड़ा में 165 करोड़ रुपए से अधिक राशि की झापन नाला मध्यम सिंचाई परियोजना को भी स्वीकृति प्रदान की गई। साथ ही दमोह मेडिकल कॉलेज के लिए नियमित और आउटसोर्स के पदों की भी स्वीकृति प्रदान की गई है।

एमबीए छात्र ने फांसी लगाई, मौत

आखिरी कॉल पर मां से सामान्य बात की, कभी कोई परेशानी का जिक्र नहीं किया

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अशोका गार्डन इलाके में किराए के कमरे में रहने वाले छात्र ने फांसी लगाकर सुसाइड कर लिया। उसने यह कदम क्यों उठाया इसका खुलासा नहीं हो सका है। पुलिस ने मृतक का मोबाइल फोन जब्त किया है। कमरे की तलाशी में फिलहाल पुलिस को सुसाइड नोट नहीं मिला है। घटना मंगलवार की रात की है। बुधवार दोपहर को पीएम के बाद बॉडी परिजनों को सौंप दी गई है। सौरभ सोनी (24) गोकुल सोनी मूल रूप से बीना का रहने वाला था। दो महीने से भोपाल अशोका गार्डन में किराए का रूम लेकर रहा था। यहां एक प्राइवेट कॉलेज से एमबीए की पढ़ाई कर रहा था। मंगलवार की शाम को मां से आखिरी बार कॉल पर बात की थी। तब सौरभ ने किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया।

पिता बोले- किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया- उसके पिता ने बताया कि मां से बातचीत के समय सौरभ हंसी मजाक कर रहा था। बिल्कुल सामान्य बात की। इससे पहले भी उसने कभी किसी परेशानी का जिक्र नहीं किया। पुलिस को उसके पास से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला है। उसके मोबाइल फोन को जब्त कर लिया गया है। देर रात बेटे के दोस्त ने सुसाइड की जानकारी दी।आज पोस्टमॉर्ट्म कराने के बाद बॉडी हमारे सुपुर्द की गई है। शव का अंतिम संस्कार गांव में ही किया जाएगा।

गृह मंत्री शाह की लिस्ट में आरिफ मसूद का नाम

वंदे मातरम् गाने से इनकार किया था, कांग्रेस विधायक फिर बोले- मैं इसे नहीं गा पाऊंगा

भोपाल (नप्र)। संसद के शीतकालीन सत्र में वंदे मातरम् पर घमासान जारी है। मंगलवार को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने राज्यसभा में वंदे मातरम् पर चर्चा के दौरान गीत पर आपत्ति दर्ज कराने वाले विपक्षी नेताओं की सूची सदन के पटल पर रखी। इस सूची में भोपाल मध्य से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद का भी नाम शामिल है। सूची में नाम आने के बाद कांग्रेस विधायक मसूद ने कहा- मैंने विरोध नहीं किया। मैंने यह कहा कि मैं इसको नहीं गा पाऊंगा, तो गलत क्या कहा।

इन नेताओं के नामों की लिस्ट शाह ने संसद में रखी- केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह द्वारा जारी की गई सूची में हाल की घटनाओं से लेकर पूर्व के मामलों का उल्लेख है। इसमें कांग्रेस सांसद इमरान मसूद, नेशनल कॉन्फ्रेंस के आगा सैयद, समाजवादी पार्टी के जियाउर्रहमान बर्क, भोपाल मध्य से कांग्रेस विधायक आरिफ मसूद, कांग्रेस सांसद सिद्धारमैया और आरजेडी विधायक सऊद आलम का नाम शामिल है। कांग्रेस व अन्य विपक्षी दलों के जिन नेताओं ने अलग-अलग मौकों पर वंदे मातरम् गाने से इनकार किया या इसे लेकर आपत्ति दर्ज कराई।

बैरिकेडिंग में घुसकर मंत्री की नेमप्लेट पर कालिख पोती

प्रतिमा बागरी के भाई के गांजा तस्करी के पकड़े जाने पर युवा कांग्रेस का प्रदर्शन

भोपाल (नप्र)। बुधवार सुबह करीब सवा सात बजे भोपाल युवा कांग्रेस के कार्यवाहक जिला अध्यक्ष अमित खत्री के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ता 74 बंगला स्थित नगरीय प्रशासन राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी के सरकारी आवास पहुंचे और बाहर लगी नेम प्लेट पर कालिख पोत दी। एक दिन पहले भी कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने बागरी के सरकारी आवास के बाहर प्रदर्शन किया था।

सतना जिले की रैगांव सीट से बीजेपी विधायक और नगरीय प्रशासन राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी के भाई गांजा तस्करी के मामले में गिरफ्तार हुए हैं। भाई की गिरफ्तारी को लेकर कांग्रेस राज्यमंत्री से इस्तीफा मांग रही है। आज मंत्री के सरकारी

आवास पर पहुंचे युवा कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया और पुलिस की बैरिकेटिंग तोड़ते हुए नेमप्लेट पर कालिख पोत दी। जबकि प्रदर्शन का पता चलते ही पुलिस ने मंत्री के बंगले की सुरक्षा बढ़ाते हुए बैरिकेटिंग कर दी थी।

मंत्री ने गांजा तस्कर भाई से किया किनारा- इधर, राज्यमंत्री प्रतिमा बागरी ने गांजा तस्करी के आरोप में पकड़े गए भाई अनिल बागरी और बहनोई शैलेंद्र सिंह से पल्ला झाड़ लिया है। खजुराहो में मंगलवार को कैबिनेट की बैठक के दौरान मीडिया ने जब उनसे सवाल-जवाब किए तो वे यह कहकर किनारा कर गईं कि- 'कोई भी अपने आप से रिश्तेदार बना लेता है। मेरा अनुरोध है कि पहले आप उसकी पुष्टि कर लें। तथ्यों की जानकारी के बाद ही बात करें।'

पुलिस अपना काम कर रही

खजुराहो के महाराजा छत्रसाल कन्वेंशन सेंटर से निकलते समय सोमवार रात को जब उनसे इस संबंध में सवाल किया गया तो वे झल्ला गईं और कहा- 'आप लोग फालतू की बात करते हैं।' हालांकि बाद में बागरी ने सुर बदले... उन्होंने कहा कि पुलिस अपना काम कर रही है। जो भी गलत करने वाला अपराधी होगा, नाते-रिश्तेदार कोई भी, पुलिस प्रशासन अपनी कार्रवाई करेगा। दोषियों पर कठोर कार्रवाई होगी। हालांकि पार्टी की पूछताछ में उन्होंने सफाई दी है कि भाई तो उनका है, बहनोई से रिश्तेदारी नहीं। जबकि बहनोई के बारे में भी कहा गया है कि वे उनके ही रिश्तेदार हैं। पार्टी में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव और प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की ओर से इस पूरे मामले से राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा और राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बीएल संतोष को अवगत करा दिया गया है।

संपादकीय

ऋणम् कृत्वा, घृतम् पीवेत् !

गले-गले तक कर्ज में डूबी मध्यप्रदेश सरकार अब दूसरे राज्यों में अपनी सम्पत्तियां बेच कर इसकी भरपाई करने का प्रयत्न करेगी। यह स्थिति इसलिए बनी है कि मोहन यादव सरकार लगभग हर माह कर्जा उठा रही है और इस कर्ज की किस्तें चुकाने में भी सरकार का दम निकल रहा है। इसी संदर्भ में चिंताजनक खबर यह है कि वित्त विभाग ने सभी विभागों को पत्र लिखकर जानकारी मांगी है, जिसमें पूछा है कि किस राज्य में कितनी संपत्ति किस रूप में है? उसका मूल्य क्या है? अगर किसी प्रॉपर्टी का कोर्ट में केस चल रहा है, किसी तरह का विवाद है तो इसकी भी जानकारी दी जाए। इन जानकारियों के आधार पर लोक संपत्ति प्रबंधन विभाग पूरे देश में फैली इन संपत्तियों का व्यापक डेटाबेस तैयार किया जा रहा है। इस कवायद का मकसद प्रदेश के बाहर मौजूद संपत्तियों को बेचकर या किराये पर देकर राशि जुटाना है। विभाग इन संपत्तियों के मुद्रीकरण यानी मॉनेटाइजेशन की रणनीति बनाएगा। केरल के वायनाड से लेकर मुंबई के पॉश इलाकों और उत्तर प्रदेश के झांसी तक, मध्य प्रदेश सरकार की करोड़ों-अरबों की संपत्तियां हैं, जो या तो विवादों में फंसी हैं या उनका सही उपयोग नहीं हो पा रहा है। गौरतलब है कि राज्य सरकार इस वक्त कुल 4 लाख 64 हजार करोड़ के कर्ज में डूबी है और चार्वाक दर्शन 'ऋणम् कृत्वा घृतम् पीवेत्' की तर्ज पर हर माह नया कर्ज उठाया जा रहा है। ऊपर से लाड़ली बहना योजना सरकार के गले पड़ चुकी है। ऐसे में कुछ प्रॉपर्टियां का सौदा भी लगभग हो चुका है। मप्र सरकार की ये प्रॉपर्टियां केरल, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश आदि राज्यों में फैली है। इनमें केरल की बीनाची इस्टेट का सौदा तो लगभग तय माना जा रहा है। इसी प्रकार मुंबई के गोरेगांव क्षेत्र में मप्र सरकार की लगभग 2.5 एकड़ (10,460 वर्गमीटर) जमीन है, जिस पर टेक वेंचर लिमिटेड नामक कंपनी का कब्जा है। इस जमीन का बाजार मूल्य 1.28 लाख रुपए प्रति वर्ग मीटर से भी अधिक है। सूत्रों के मुताबिक, इस कंपनी पर सरकार का 77.15 करोड़ रुपए का किराया बकाया है। उसे बेदखल किया जा रहा है। नागपुर में मध्य प्रदेश सड़क परिवहन निगम ने 1956 में रक्षा विभाग से 37,107 वर्गफुट जमीन खरीदी थी, लेकिन 2018 में स्थानीय भूमि अभिलेख अधीक्षक ने इसे महाराष्ट्र सरकार के नाम कर दिया। एक लंबी कानूनी लड़ाई के बाद इस जमीन पर मप्र का हक बहाल हुआ है। इस जमीन की कीमत 150 करोड़ रुपए लगाई गई है। उप्र के झांसी में झांसी में मध्य प्रदेश सरकार की करीब 19 एकड़ जमीन है, जिस पर वर्तमान में उत्तर प्रदेश सरकार का कब्जा है। इसका स्वामित्व फिर से हासिल किया जा रहा है। झांसी में ही बस डिपो की 1373.80 वर्गमीटर जमीन को लेकर भी मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश सरकार के बीच विवाद है। यह जमीन 1994 में खरीदी गई थी। इस पर कोर्ट ने स्टे दिया हुआ है। केंद्र सरकार जब नेपानगर की ऐतिहासिक नेपा लिमिटेड (मिल) को बेचने की तैयारी कर रही है, तब मध्य प्रदेश सरकार ने उसकी 1199 एकड़ जमीन में से 527 एकड़ 'सरप्लस' भूमि पर अपना दावा ठोक दिया है। हालांकि राज्य सरकार अपनी सम्पत्तियां पहली बार नहीं बेच रही है। विगत पांच सालों में राज्य सरकार की 101 प्रॉपर्टियां बेची जा चुकी हैं और इनके माध्यम से 110.88 करोड़ रुपए जुटाए गए हैं। हालांकि राज्य सरकार पर जितना कर्ज है, उसकी तुलना में यह राशि ऊंट के मुंह में जीरे के बराबर ही है। अलबत्ता मप्र सरकार का दावा है कि उसका राजस्व सरप्लस है, इसलिए कर्ज लेने की उसकी पात्रता बनी हुई है।

देश की रीढ़ अरावली का दर्द और हम

नजरिया

राजेन्द्र सिंह

लेखक 'तरूण भारत संघ' के अध्यक्ष एवं 'जल बिरादरी' के राष्ट्रीय समन्वयक हैं।

अरावली के पुनर्जीवन हेतु वर्ष 1986 में गोपालपुर गांव में मेवालो का बांध बनाकर, पहाड़ियों पर पशुओं की चराई के दबाव को कम करने का काम शुरू किया था। इस बांध के तैयार होने से गोपालपुरा गांव में पानी आ गया था। गांव से लाचार, बेकार, बीमार होकर उजड़े युवक शहर चले गए थे, लेकिन कुओं में पानी आते ही शहर से वापस गांव आने लगे थे। तभी उनके रिश्तेदार पालपुर के जंसी मीणा ने गोपालपुरा आकर कहा था कि हमारे सभी कुएं खदानों के कारण सूख गए हैं, वहां जल-संरक्षण हेतु जोहड़ की जरूरत है। तभी पालपुर में जांसी मीणा, तिलवाड़ी के छोटेलाल मीणा के यहां जोहड़ बनाने का काम किया था। छोटेलाल मीणा कहते थे कि खनन से पहाड़ तो उजाड़ ही रहा है; इससे हम भी उजड़ रहे हैं। हमारे लिए जो जोहड़ बना है, उससे हम तभी बसे रह सकते हैं, जब खनन बंद होगा।

अरावली आड़ी पर्वतमाला है। भारत की ज्यादातर पर्वत मालाएं मानसून के अनुकूल उत्तर से पूर्व होती हैं। अरावली इनके विपरीत पश्चिम से उत्तर-मध्य की तरफ खड़ा है। यह पश्चिम से आने वाली वायु के साथ रेतीली हवाओं को अपने जंगलों में समा लेता है। इसीलिए इसे भारत की रीढ़ कहते हैं। यह अकेली पर्वतमाला है, जिसमें पुरानी पर्वत चोटियां के बीचों-बीच नए रेत के टीले दिखाई देते हैं। 'बिरला साइंस इंस्टीट्यूट, जयपुर' के निदेशक प्रो. एसएस डावरिया ने 'रिमोट सेंसिंग' द्वारा अध्ययन करके, उच्चतम न्यायालय में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। उच्चतम न्यायालय के तत्कालीन न्यायमूर्ति एमएन वेंकटचेलैया ने भारत सरकार को इन रेतीली हवाओं से दिल्ली को बचाने का निर्देश दिया था। तभी 7 मई 1992 'अरावली संरक्षण नोटिफिकेशन' भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मंत्रालय ने प्रकाशित किया था।

इससे पूर्व उच्चतम न्यायालय ने अरावली को एक समग्र पर्वतमाला मानकर बचाना तय कर दिया था। तब लगता था कि अरावली के आंसू न्यायालय ने पोंछ दिए हैं और अरावली के दर्द को न्यायपालिका ने समझ लिया है, लेकिन अब 20 नवंबर 2025 को उच्चतम न्यायालय के निर्णय, रिपोर्ट और शपथपत्र को पढ़कर लगता है कि ऊंच - नीच में पहाड़ को भी बांट दिया गया है। 100 मीटर से अधिक ऊंची पहाड़ियां ही अरावली है, इससे नीचे अरावली नहीं है। उन पहाड़ियों को खोजकर निकालो जिनको हमने 1980 के दशक से बचाने की मुहिम खड़ी की थी।

अरावली के पुनर्जीवन हेतु वर्ष 1986 में गोपालपुर गांव में मेवालो का बांध बनाकर, पहाड़ियों पर पशुओं की चराई के दबाव को कम करने का काम शुरू किया था। इस बांध के तैयार होने से गोपालपुरा गांव में पानी आ गया था। गांव से लाचार, बेकार, बीमार होकर उजड़े युवक शहर चले गए थे, लेकिन कुओं में पानी आते ही शहर से वापस गांव आने लगे थे। तभी उनके रिश्तेदार पालपुर के जंसी मीणा ने गोपालपुरा आकर कहा था कि हमारे सभी कुएं खदानों के कारण सूख गए हैं, वहां जल-संरक्षण हेतु जोहड़ की जरूरत है। तभी पालपुर में जांसी मीणा, तिलवाड़ी के छोटेलाल मीणा के यहां जोहड़ बनाने का काम किया था। छोटेलाल मीणा कहते थे कि खनन से पहाड़ तो उजाड़ ही रहा है; इससे हम भी उजड़ रहे हैं। हमारे लिए जो जोहड़ बना है, उससे हम तभी बसे रह सकते हैं, जब खनन बंद होगा।

'तरुण भारत संघ' ने दोनों गांव में जोहड़ बनाए, लेकिन इनका सारा पानी खदानों में चला गया क्योंकि कुओं से ज्यादा गहरी खदानें थीं। तभी से पानी के लिए ही खदानों के विरुद्ध लड़ाई शुरू हुई। उच्चतम न्यायालय के आदेश से जैसे ही खदानें बंद कराई गईं तो उनके दोनों कुओं में पानी आ गया। फिर तो जेंसी का बेटा ख्याली मीणा, महेश शर्मा, गोपी कुम्हार मलाना ने मिलकर पूरी 'अरावली बचाओ यात्रा' की। ऐसे पालपुर, तिलवाड़ी, तिलवाड़, बैरवा डूंगरी, बल्देवगढ़, गोवर्धनपुरा, मल्लाना के पांचू सरपंच ने प्रत्यक्ष सत्याग्रह करके खनन रुकवाया था। मल्लाना में पाटनी, आरके मार्बल जैसे बड़े - बड़े खान मालिक पहुंच गए थे। वे भी लोक सत्याग्रह के कारण वहां खान नहीं चला सके थे। तब उच्चतम न्यायालय ने पर्वतमाला और उसमें रहने वाले लोगों से अरावली का दर्द सुनकर उसे न्याय दिया था।

उच्चतम न्यायालय के उस आदेश ने अरावली पर्वतमाला की जान और इज्जत बचाई थी। मेरे विरुद्ध भयानक मुकदमे खान मालिकों ने दर्ज किए थे। पुलिस भी अपनी कार्रवाई करने लगी थी। पर्यावरण कार्यकर्ता को बचाने हेतु सरकार ने उसी काल में कानून में बना दिया था और उस कानून का पालन भी होता था। तब पहाड़ का दर्द सुना जाता था। पहाड़ और पहाड़ बचाने वालों को न्यायालय बचाता था। अब क्या नया हुआ मालूम नहीं? अरावली पर्वत की पीड़ा तो कोई सुनने को तैयार नहीं है। जो अरावली की पीडा जानते हैं, वो अरावली को बचाना चाहते हैं, लेकिन अरावली को बचाने से, बचाने वालों की पीड़ा बढ़ने लगी है।

अरावली तो लोगों तथा अपने जंगलों की पीड़ा कम करने के लिए आडा पर्वत बनकर खड़ा है। इसलिए राजस्थान के रेगिस्तान से अधिक अच्छी वर्षा अरावली क्षेत्र में होती है। अरावली पर्वतमाला में 'सीधी साल्ह' (सीधी दरार) हैं, इनके द्वारा वर्षा जल अरावली के भूजल भंडारों में जमा होता रहता है। इसी से चारों राज्यों में जहां अरावली पर्वतमाला है, वहां मीठा जल, सुरक्षित पेयजल आज भी उपलब्ध होता रहता है। यह पर्वतमाला 'भूजल बैंक' को समृद्ध बनाकर रखती है। इसलिए दिल्ली के खंडावप्रस्थ, हरियाणा के काला पहाड़, गुड़गांव, फरीदाबाद, नूह को भू-जल संरक्षित घोषित करने की बात चली थी। हरियाणा में जहां पहाड़ियां हैं, वहां मीठा पेयजल, स्वस्थ जल उपलब्ध है। शेष क्षेत्रों में खारा जल है।

ऐसा ही अरावली क्षेत्र के चारों राज्यों में आज भी देखने को मिल रहा है। यदि अरावली पहाड़ियों में खनन कर दिया तो बादलों का संतुलन बिगड़ जाएगा। बेमौसम वर्षा चक्र चलेगा, उसके कारण बाढ़ - सुखाड़ की मार पड़ेगी, खेती का उत्पादन घटेगा, खाद्य व पेयजल सुरक्षा पर संकट बढ़ेगा। इस कारण लोगों में बेचैनी बढ़ रही है। अब अरावली में सतत विकास के नाम पर खनन विनाश करेगा। यदि हम अरावली की पीडा को समझें तो इस संकट को मिटाने की कोशिश आरंभ हो सकती है। यह सब स्वयं ही दर्द मिटाने का काम करेगी और स्वस्थ जलवायु, खाद्य, जल-सुरक्षा प्रदान करेगी। हमारे गांवों को लाचारी, बेकारी, बीमारी से मुक्ति दिलाती रहेगी। यही अरावली क्षेत्र के प्रदूषण, पर्यावरण शोषण, अतिक्रमण मुक्त रखने के रास्ते पर आगे बढ़ाएगी। खनन खुलते ही जंगल पर अतिक्रमण, जल-संसाधनों के प्रदूषण और युवाओं का शोषण शुरू होगा।

जंगल कटने से मिट्टी कटेगी और खेतों में गाद जमा होगी। मिट्टी के कटाव से खेतों की जमीन कम होगी। पशुओं के लिए चारा, महिलाओं के लिए पेयजल संकट बढ़ेगा। जब खदान चलती थी, तब लोग मालिक से मजदूर बन गए थे। गांव छोड़कर लोग उजड़ने लगे थे। जब खदानें बंद हुई तो वे अपनी जमीन ठीक करके, उसमें खेती करने लगे थे। अब फिर खदानें चालू होंगी तो पहले जैसी ही बदहाली शुरू होगी। अरावली के लोगों और अरावली का दर्द एक ही है। अरावली पर्वत की प्राकृतिक पीड़ा और मानवीय संस्कृति पर संकट एक साथ ही आ गया है। इसे रोकने के लिए हम संकट को समझें और अरावली के लोग संगठित होकर, खनन से अरावली को बचाए। खनन मुक्त अरावली का पर्यावरण सुरक्षा के साथ-साथ सतत रूप में पूरे भारत और दुनिया के लिए शुभ होगा। (सप्रेस)

वंदे मातरम् पर पीएम का वक्तव्य

तुष्टिकरण की नींव बनी वंदे मातरम् का विभाजन

प्रमोद भार्गव

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

मुस्लिम तुष्टिकरण की बुनियाद पर भारत को जितनी हानि उठानी पड़ी है, दुनिया के अन्य किसी देश ने नहीं उठाई। इसकी शुरूआत अंग्रेजों ने बंगाल विभाजन से की,इसी कड़ी में वंदे मातरम् गीत के टुकड़े किए गए और फिर देश का भी बंटवारा जिन्ना की अलग मुस्लिम राष्ट्र बनाने की जिद के चलते हो गया। जबकि संपूर्ण वंदे मातरम् गीत भारत की शाश्वत संकल्पना है। राष्ट्रीय गीत के 150 वर्ष पूरे होने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में हुई चर्चा के दौरान गीत के विभाजन के लिए पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू को सीधे जिम्मेवार ठहराया। कहा, 'नेहरू ने जिन्ना की सांप्रदायिक चिंताएं दोहराकर वंदे मातरम के साथ विश्वासघात किया। गीत के टुकड़े कराए। इससे देश तुष्टिकरण की राजनीती की राह पर चल पड़ा,जो देश विभाजन पर जाकर थमा।' इसी तुष्टि के चलते 1875 में रचित इस गीत के केवल दो पद राष्ट्रीय गीत के रूप अपनाए गए।

मोदी के इस कथन ने इतिहास के इस काले पन्ने पर जमा धूल को हटाने का काम नए सिरे से कर दिया है। जबकि आजादी की लड़ाई में वंदे मातरम् की भावना ने पूरे राष्ट्र का जागरण किया था, लेकिन दुर्भाग्य से 1937 में इस गीत के महत्वपूर्ण पदों को उसकी आत्मा के एक हिस्से को अलग कर दिया गया था। जिस भाव से वंदे मातरम् के टुकड़े किए गए थे, कालांतर में उसी भाव ने विभाजन के बीज बो दिए थे। जबकि यह ठोस और निर्विवाद सच्चाई है कि देश को आजादी दिलाने में इस गीत की अहम् भूमिका रही है। बंकिमचंद्र चटर्जी के बांग्ला भाषा में लिखे गए उपन्यास 'आनंद मठ' में यह गीत दर्ज है। राष्ट्रगान के रूप में स्वीकारा गया यह गीत कोई मामूली गीत नहीं है। भारत को उसकी व्यापक राष्ट्रीयता की पहचान और स्वाभिमान इसी गीत से प्राप्त हुए। नागरिक सभ्यता की विरासत, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और मानव सेवा के मूल्यों के उत्स इसी गीत के समवेत स्वर की उपज हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध भिन्न जातीय और धर्म-समुदायों को संगठित करने के अभियान में इसी गीत की भूमिका बुलंद थी। तय है, वंदे मातरम् क्रांति के स्वरों में नींव का पत्थर था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की रक्त धमनियों में विद्रोह की उग्र भावना इसी गीत की देन है। 1942 में महात्मा गांधी के भारत छोड़ो आंदोलन को देशव्यापी धरातल इसी गीत के बूते मिला था। और वह यही आंदोलन था, जिसमें गांधी ने 'करो या मरो' का नारा दिया था। यह नारा गांधी के अहिंसा के सिद्धांत पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करने वाला भी माना जाता है। सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज के फौजियों ने भी इसी गीत को गाते हुए मातृभूमि की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर किए थे। हालाँकि महात्मा गांधी 1905 में ही लिख चुके थे कि वंदे मातरम् इतना लोकप्रिय हो गया है कि वह राष्ट्रगान जैसा बन गया है।

14 अगस्त 1947 की मध्य-रात्रि में जब देश आजाद हो रहा था, तब इस मंत्र-गीत का गायन श्रीमती सुचेता कृपलानी ने किया और वहां उपस्थित लोग इस गीत के सम्मान में गीत खत्म न हो जाने तक खड़े रहे थे। 15 अगस्त 1947 को जब स्वतंत्रता का सूर्योदय हो रहा था, तब आकाशवाणी पर पंडित ओंकारनाथ ठाकुर ने इसे बड़े ही रोचक ढंग से गाया। आखिरकार 24 अगस्त 1948 को जन-गण-मन के साथ इस गीत को भी राष्ट्र गीत की प्रतिष्ठा मिली। लेखक और दार्शनिक युगदृष्टा होते हैं, इसलिए बंकिम बाबू ने इस गीत को लिखे जाने के वक्त ही अपनी दिव्य-दृष्टि से अनुभव कर लिया था कि यह गीत राष्ट्रीय आंदोलन का हिस्सा बनकर लोकप्रियता के शिखर चूमेगा, इसीलिए उन्होंने इसे बांग्ला भाषा में न लिखते हुए संस्कृत में लिखा। मूल और संपूर्ण गीत की केवल नौ पंक्तियां बंगाली में हैं। इस गीत का जो संपादित अंश राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकार किया गया है, वह केवल दो पद और आठ पंक्तियों में है।

वंदे मातरम् को इस्लाम विरोधी जताया जाता रहा है। जब कांग्रेस ने इसे प्रार्थना गीत के रूप में स्वीकार किया था, तब भी इसकी खिलाफत शुरू हो गई थी। 15 अक्टूबर 1937 को लखनऊ में मोहम्मद अली जिन्ना वंदे मातरम् का विरोध किया। वस्तुतः नेहरू ने इस विरोध के पांच दिन बाद ही सुभाष बोस लिखे एक पत्र में कहा कि 'आनन्द मठ में उल्लेखित वंदे मातरम् की पृष्ठभूमि मुसलमानों को उकसा सकती है।' इसी के बाद कांग्रेस कार्यकारिणी ने आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया। इसमें मौलाना आजाद, पंडित नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस जैसे प्रखर संस्कृति मर्मज्ञ सदस्य थे। समिति को जिम्मेदारी सौंपी गई थी कि वे रवीन्द्रनाथ ठाकुर से विचार-विमर्श कर वंदे मातरम् के संबंध में दो टूक सलाह दें। समिति द्वारा रवीन्द्रनाथ से परामर्ष के बाद जो प्रतिवेदन प्रस्तुत किया गया, उसके उपरांत कांग्रेस कार्यकारिणी ने फैसला लिया कि हरेक राष्ट्रीय सार्वजनिक सभा में वंदे मातरम् के केवल दो पद गाये जाएं। यानी कांग्रेस मुस्लिम लीग के समक्ष झुकी और मुस्लिम तुष्टिकरण की राह पकड़ ली। तुष्टि का यही रास्ता देश को विभाजन के द्वार तक ले गया।

बावजूद देश-विभाजन के लिए जिम्मेदार मुस्लिम लीग के नेता वंदे मातरम् को बुतपरस्ती, अर्थात मूर्ति पूजा मानते हुए इसका विरोध लगातार करते रहे। इस बहाने लीगियों ने अल्पसंख्यकों को खूब उकसाया। नतीजतन 1938 तक कांग्रेस के जो प्रमुख मुस्लिम नेता इस गीत की राष्ट्रीय गरिमा का ख्याल रखते चले आ रहे थे, वे भी दबी जुबान से इसका विरोध करने लगे। इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप बहुसंख्यक हिंदू और सिख हठपूर्वक इस गीत की महिमा के बखान में लगे रहे। बाद में साझा सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के नजरिये से उर्दू के उदारवादी कवियों व राजनीतिकों ने वंदे मातरम् का अनुवाद 'ऐ मादर, तुझे सलाम करता हूं' किया, अर्थात् हे माता, तुझे प्रणाम करता हूं करके किया,लेकिन कट्टरपंथियों के भाव उतरा नहीं। जबकि मुल्क को गुलामी से आजाद कराने की इस इबादत में गलत कुछ भी नहीं था। अरबी-फारसी के अनेक कवियों ने भी देश को 'मां' कहकर संबोधित किया है। लिहाजा राष्ट्र के प्रति अपनी भावनाओं व उद्गारों को प्रचलित रूपकों अथवा प्रतीकों में प्रकट करना मूर्ति पूजा या बुतपरस्ती कतई नहीं थी। वंदे मातरम् एक मौलिक रचना है, इसकी व्याख्या धर्म नहीं, केवल साहित्य के संदर्भ में होनी चाहिए थी। इसे यदि कोई सांसद या विधायक इस्लाम विरोधी जताता है, तो उसका मकसद धर्म के बहाने राजनीतिक रोटियां सेंकना भर था, जो अलगाववादी राजनीति की संकीर्ण मानसिकता का प्रतीक है। जिन्ना और अन्य लीगी इसी विभाजनकारी मानसिकता से काम करते रहे और देश दो टुकड़ों में बंट गया। स्वतंत्र भारत में निर्वाचित कुछ मुस्लिम सांसद और विधायक संविधान की शपथ लेने के बाद भी सदन में इस गीत का अनादर करते रहते हैं। ऐसे ही चंद सिरफिरे मुस्लिमों ने आजाद हिंद फौज के नारे, 'जय हिंद' का भी विरोध किया था । दैनिक अखबार 'डान' ने वंदे मातरम् की आलोचना की थी, तब गांधी को कहना पड़ा था, 'वंदे मातरम् कोई धार्मिक नारा नहीं है, यह विशुद्ध राजनीतिक नारा है।' यही नारा था, जिसने सोये हुए भारत को जगाने का काम करके, आजादी हासिल कराई थी।अतएव संसद में इस गीत के इतिहास में झांकने की बहस को एक सबक के रूप में लेना चाहिए,जिससे भविष्य में देश की संप्रभुता एवं अखंडता से खिलवाड़ की गुंजाइश ही नहीं रह जाए?

बड़े लेखक, बड़े आदमी !

सुधीर देशपांडे

इसमें कोई दो मत नहीं कि वे बड़े व्यक्ति हैं। वे काफी बड़े व्यक्ति हैं जिनके आगे बाकी सब छोटे छोटे दिखाई देते हैं। जैसे सूर्य और खद्योत। बड़े व्यक्ति होने के कारण पूरे क्षेत्र में भाईसाहब के नाम से जाने जाते हैं। भाईसाहब अच्छे लेखक हैं। वैसे वे लेखक कम है। बाकी ज्यादा है। उनका अपना व्यवसाय है। तो व्यवसायी भी है। व्यवसायी है, इसलिए धनाढ्य भी हैं। धनाढ्य हैं, इसलिए बाकी सारे सुभीते उनके पास हैं। सुभीते हैं, तो कई लोग उनके आसपास मंडराते रहते हैं। जैसे फूलों के पास भँवरे और तितलियाँ मँडराती है। उनकी भी आम आदमी जैसी तमाम इच्छाएँ हैं। परंतु आम इच्छाएँ, उनकी इच्छाएँ नहीं हैं। धनाढ्य आदमी, अपने आपको ज्ञानाढ्य दिखाने का प्रयत्न भी करें तो कोई आश्चर्य नहीं। लक्ष्मी का प्रयत्न सरस्वती को अपनी बांदी समझने का हमेशा रहा है। कहते हैं, लक्ष्मी उल्लू की सवारी करती है। पर सरस्वती को इस बात का दंभ है कि वह ज्ञान की देवी है और लक्ष्मी की उपस्थिति उसी से है। और भाईसाहब को देखकर लगता है कि जो दंभी होते हैं उनका घर खाली होता है। मजे की बात यह है कि ज्ञानाढ्य होकर वे व्यक्ति नहीं रह जाते, व्यक्तित्व हो जाते हैं। वैसे यह भी सही है कि हर धनाढ्य भी एक व्यक्तित्व होता है वैसे ही कुछ और भी व्यक्ति से व्यक्तित्व हो जाते हैं। यहाँ वे पदधारी होते हैं, नेता होते हैं या कुछ न होते हों, तब भी कुछ तो होता है कि वे व्यक्तित्व हो जाते हैं। वे चिंतक हो सकते हैं। आलोचक हो सकते हैं। वे समाजसेवी हो सकते हैं। वस्तुतः इन दिनों व्यक्तित्व हर जगह हावी हैं। ऐसे में भाईसाहब व्यक्ति होने के साथ व्यक्तित्व भी हैं। उनके मन में एक इच्छा लेखक बनने की है। लेखक हो जाना बुद्धिमान होने की गारंटी है या निशानी है। ऐसा वे मानते हैं।

व्यक्तित्व का टोटा नहीं है, पर व्यक्तित्व के लिए लेखक होना, चौथे चांद के समान है। तो वे लेखक भी हैं। लेखक हैं तो लिखते भी हैं। लिखते हैं, इसलिए लेखक हैं; यह आप कह सकते हो। लेखक नाम ही लिखने वाले का है, यह अलग से बताने की बात नहीं है। तो लिखने के लिए वे क्या लिखते हैं, यह उन्हें तय नहीं करना पड़ता।

अभी कल ही उन्होंने कुछ लिखा और दन्न दिनी से उसे एक पत्रिका को प्रेषित भी कर दिया। वैसे ये ऐसा हमेशा से करते हैं। इस तरह उनकी लेखकीय उम्र इतनी हो गई है कि उसे वे अपनी हर रचना छपने की गारंटी मान कर चलते हैं। कुछ हैं जो उनकी रचनाएँ बिना पढ़े छाप भी दें, पर सब संपादक एक से नहीं होते। वे नाम पढ़कर नहीं बल्कि रचना पढ़कर रचना के छापने का निर्णय करते हैं। यह निर्णय, भाईसाहब को, स्वाभाविक है, नागवार गुजरता है। और फिर उस पर संपादक यह टीप लिख दे कि रचना कुछ कमजोर है। उनके अहं को ठेस पहुंचती है। वे रचना के समर्थन में तर्क भी देते हैं। विज्ञापन भी। विज्ञापन से पत्र चलता है। पत्र के चलने से रचना और रचना के चलने से व्यक्तित्व बनता है।

अभी यही हुआ। एक रचना उन्होंने एक साहित्यिक पत्रिका को भेज दी। शायद जितनी बड़ी रचना नहीं थी, उससे बड़ा उनका परिचय था। यह परिचय यह दर्शाने के लिए था कि वे वाकई बड़े लेखक हैं। जिसमें साठ सत्तर किताबों के साथ जाने अनजाने तीन सौ साठ पुरस्कारों की लंबी सूची थी। चार सौ बीस बैठकों, संगोष्ठियों और कवि सम्मेलनों में अध्यक्षता, मुख्यातिथ्य और विशिष्टातिथ्य का पद सुशोभित करने का गौरव उन्हें प्राप्त था। ये बात अलग थी कि अधिकांश गोष्ठियों का व्यय उन्होंने ही वहन किया हुआ था। आखिर बड़े उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए छोटे छोटे-छोटे जोखिम उठाने ही पड़ते हैं। इस बार कुछ हो न हो लेखक होने की उनकी इसी इच्छा ने इतना सर उठाया कि उन्होंने पत्रिका को हर माह विज्ञापन इस शर्त पर देना स्वीकार किया कि उनकी रचनाओं पर संपादक स्वयं टीप लिख कर उसे छापे। पत्रिकाओं की स्थिति क्या है, यह न पाठकों से छिपी है, न लेखकों से, न मालिक से, न संपादक से। अब ऐसे में घोड़े को अगर जिंदा रखना है तो घास चाहिए, घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या? पत्रिका निकले, निकलती रहे, इससे बड़ी कामना किसी की क्या हो सकती है। तो प्रस्ताव स्वीकार हो गया।

उनके गरीब खाने पर कवि लेखकों का आना जाना लगा रहता है। जो उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा भी करते हैं। वैसे भी पुराने जमाने से ये चलन है कि राजे- महाराजे, सेठ - साहूकार अपने शौक की खातिर कहें या अपनी प्रशंसा के लिए या बड़प्पन दिखाने के लिए कुछ कवियों को आमंत्रित कर ही लेते थे। सारे ही कुंभनदास की तरह पागल नहीं होते थे। जो हरिनाम बिसर जाएगा और आने जाने में चप्पल घिस जाएगी इस डर से राज दरबार जाते ही नहीं थे।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

भारतीय भाषा दिवस

डॉ. लोकेन्द्र सिंह

लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में सहायक प्राध्यापक हैं।

भाषा जोड़ती है, तोड़ती नहीं

भारत की संस्कृति की विशेषता है कि वह विविध रूपों में प्रकट होती है। हम सब मिलकर 11 दिसंबर को महान तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती प्रसंग पर 'भारतीय भाषा दिवस' मनाते हैं। यह प्रसंग ही हमें भाषाओं के प्रति संवेदनशील होने की ओर संकेत करता है और बताता है कि भाषाएं मानवीय संबंधों में सेतु का कार्य करती हैं। एक-दूसरे से जोड़ती हैं। श्री भारती ने तमिल को शास्त्रीय स्वरूप से बाहर निकालकर सरल और आम बोलचाल की तमिल का प्रयोग किया ताकि उनके विचार और तमिल साहित्य का ज्ञान आम लोगों तक पहुँच सके। तमिल को प्राथमिकता देने के बावजूद सुब्रह्मण्यम भारती ने हिन्दी और तेलुगु सहित अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान दिखाया। वह चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान हो, जिससे भारत एक सशक्त राष्ट्र बन सके। उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि भारत की विभिन्न भाषाएं उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी शक्ति और सुंदरता हैं।

जब कहीं से यह समाचार पढ़ने/सुनने को मिलता है कि मराठी, तमिल, तेलगू या अन्य कोई भाषा नहीं बोलने के कारण व्यक्ति के साथ मारपीट कर दी गई, तो दुःख होता है कि संकीर्ण राजनीति हमें किस दिशा में लेकर जा रही है। हम अपनी ही भाषाओं का सम्मान क्यों नहीं कर रहे हैं? जो भाषाएं आपस में जुड़ी हैं, उनके नाम पर हम एक-दूसरे से दूर क्यों हो रहे हैं? भारत की सभी भाषाओं के शब्द भंडार एक-दूसरे के शब्दों से समृद्ध हैं। हमें तो भाषायी विविधता का उत्सव मनाना चाहिए। भारत की संस्कृति की विशेषता है कि वह विविध रूपों में प्रकट होती है। हम सब मिलकर 11 दिसंबर को महान तमिल कवि सुब्रह्मण्यम भारती की जयंती प्रसंग पर 'भारतीय भाषा दिवस' मनाते हैं। यह प्रसंग ही हमें भाषाओं के प्रति संवेदनशील होने की ओर संकेत करता है और बताता है कि भाषाएं मानवीय संबंधों में सेतु का कार्य करती हैं। एक-दूसरे से जोड़ती हैं। श्री भारती ने तमिल को शास्त्रीय स्वरूप से बाहर निकालकर सरल और आम बोलचाल की तमिल का प्रयोग किया ताकि उनके विचार और तमिल साहित्य का ज्ञान आम लोगों तक पहुँच सके। तमिल को प्राथमिकता देने के बावजूद सुब्रह्मण्यम भारती ने हिन्दी और तेलुगु सहित अन्य भारतीय भाषाओं के प्रति भी सम्मान दिखाया। वह चाहते थे कि सभी भारतीय भाषाओं के बीच ज्ञान का आदान-प्रदान हो, जिससे भारत एक सशक्त राष्ट्र बन सके। उनका स्पष्ट दृष्टिकोण था कि भारत की विभिन्न भाषाएं उसकी कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी शक्ति और सुंदरता हैं।

भाषा मनुष्यों के बीच विचारों, भावनाओं और सूचनाओं के सुचारु आदान-प्रदान को संभव बनाती है। यदि भाषा न हो, तो यह सब संभव नहीं हो सकता। भाषा को लेकर अगर हम किसी संकीर्ण विचार से ग्रसित नहीं है, तब यह हमें एक अलग दुनिया की सैर कराती है, जहाँ एक-दूसरे के प्रति सम्मान है, अपनत्व है, एक-दूसरे से जुड़ने की ललक है। आपने कभी सोचा है कि कितना अपनापन लगता है जब कोई हमारी मातृभाषा में बात करता है या फिर हम सामने वाले की मातृभाषा में बात करने की कोशिश करते हैं। चूँकि मैं हिन्दी भाषी हूँ तो जब किसी मलयाली, कन्नड़, असमिया, बांग्ला, तमिल या तेलगू सहित अन्य भारतीय भाषा बोलने वालों को हिन्दी में भाषण देते या बात करते हुए सुनता हूँ तो जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसका वर्णन यहाँ संभव नहीं है। मैं भी प्रसासपूर्वक अन्य भारतीय भाषा में एक-दो वाक्य सीखकर उनके साथ अपनेपन का रिश्ता बनाने की ओर एक-दो कदम बढ़ाता हूँ। सच, मानिए यह पहल हृदयों को मिलाने का काम करती है। भारतीय राजनीति में इसका उदाहरण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रूप में हमारे सामने है।

संपूर्ण देश में उनकी लोकप्रियता का कारण है कि वे जिस स्थान पर और जिन लोगों के बीच भाषण दे रहे होते हैं, उनके साथ संवाद स्थापित करने के लिए अभिवादन उनकी ही भाषा में करते हैं। प्रधानमंत्री मोदी दुनिया के अलग-अलग देशों के राष्ट्राध्यक्षों को सोशल मीडिया पर बधाई-शुभकामना एवं अन्य विषयों से जुड़े महत्वपूर्ण पोस्ट भी उनकी ही भाषा में करते हैं। यानी देश-दुनिया को जोड़ने के लिए भाषा को बेहतरीन उपयोग हम प्रधानमंत्री मोदी से सीख सकते हैं।

अनुवाद और बहुभाषावाद के माध्यम से भाषाएं सांस्कृतिक दूरियों को कम करती हैं। एक भाषा सीखना दूसरे समुदाय के विचारों और जीवनशैली को समझने का द्वार खोलता है, जिससे हमारे पूर्वाग्रह भी कम होते हैं। इसलिए व्यक्ति को अपनी मातृभाषा के अलावा दूसरी भाषा सीखने का प्रयास भी करना चाहिए। 'भाषा जोड़ती है, तोड़ती नहीं', यह आदर्श विचार इस दृष्टिकोण पर आधारित है कि भाषा लोगों को एक-दूसरे से जुड़ने, भावनाएं साझा करने और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने में सहायता करती है। भाषा के नाम पर भारतीय समाज को तोड़ने की साजिश का हिस्सा बन रहे लोगों को यह बात भली प्रकार से समझनी चाहिए। उन्हें अपनी ऊर्जा भारतीय भाषाओं को समृद्ध करने में लगाना चाहिए। विशेषकर, संकीर्ण राजनीति के प्रभाव में आकर हिन्दी का विरोध करने वाले बंधुओं को यह देखना चाहिए कि हिन्दी का विकास एवं विस्तार अहिन्दी भाषी महानुभावों ने अधिक किया है, जिनमें प्रमुख हैं- स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मा गांधी, माधवराव सप्रे, विनोबा भावे, गोपालस्वामी अय्यंगर, डॉ. चलसानि सुब्बाराव, काका कालेलकर, आर. वेंकटरमण, ज्योतिराव फुले इत्यादि। हिन्दी की पहली कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' के रचनाकार प्रख्यात पत्रकार माधवराव सप्रे संदेश देते हैं कि 'मैं मराठी हूँ लेकिन हिन्दी के विषय में मुझे उतना ही अभिमान है, जितना किसी हिन्दी भाषी को हो सकता है'। वहीं, स्वामी दयानंद सरस्वती मानते थे कि 'हिन्दी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है'। इस प्रकार के राष्टीय दृष्टिकोण की आवश्यकता है, जो भाषा के वास्तविक उद्देश्यों को स्थापित करता है।

सदैव स्मरण रखें कि जब भाषा को सम्मान, समावेश और समझ के साथ प्रयोग किया जाता है, तो यह निश्चित रूप से 'जोड़ती' है। हमारे पुरखों ने ऐसा करके दिखाया है। संपूर्ण भारत में इसके अनुकरणीय उदाहरण हमें मिलते हैं। इसलिए हमें अपनी भाषाई विविधता का उत्सव मनाना चाहिए और हर भाषा को सम्मान देना चाहिए, क्योंकि प्रत्येक भाषा एक अनमोल सांस्कृतिक खजाना है। हम एक-दूसरे की भाषा को सीखें, समझें और भावनाओं से लेकर शाब्दिक आदान-प्रदान करें।

वक्रोक्ति

विश्वास व्यास

लेखक व्यंग्यकार हैं।

टाइम पास से फ्लाइट फेल तक

जिंदगी में मैने केवल टाइम ही पास किया है। आप तो जानते ही की समय बड़ा बलवान होता है, मूल्यवान होता है। आपको जानकार खुशी होगी कि इस ख़ाकसार ने उसी को पास किया, और कर रहा है।

वक्त की परीक्षा में पास होने के बाद, मेरी पास होने की रुचि खत्म हो गई। इसलिए मैने फेल होने का कोई अवसर हाथ से जाने नहीं दिया।

फैज साहब के शब्दों में हम 'जहां पहुंचे (ना) कामयाब आए!'

बात ऐसी है कि लगभग हर आम आदमी की तरह अपनी आधी गुजर चुकी ज़िन्दगी का सफर सार्वजनिक परिवहन के सहारे कटा है।

मुझे याद आता है पहले सरकारी बसे चला करती थी। परिवहन निगम की वो बसे हमारे दिल में बसती थी। क्योंकि उनकी और अपनी हालत लगभग एक जैसी थी। घिसे टायर, फटी सीटे, बिना कांच की खिड़कियां, टपकती छत और दिल का गुबार निकालता सा काला धुआं छोड़ती हुई। बस जैसे तैसे अपने को सड़क पर घसीटते चलती थी। बुजुर्गों के शब्दों में इन बसों में हॉर्न के सिवा सब कुछ बजता था। जरा सी चढ़ाई में चीख चीख कर हांफने लगती। बेचारे ड्राइवर साहब अपनी सारी ताकत लगाते तब कही जाकर वह चल पाती। मुझे लगता था जैसे वे बसे, अपने खस्ता हाल का चलता फिरता मॉडल था।

सच में, बड़ा अपनापन सा था, उन बसों में!

फेल होने मामले में भी इन बसों ने मेरा साथ बराबरी से निभाया। जब भी लगता की आज घर जल्दी पहुंच जाएंगे, बस फेल हो जाती। मतलब खराब हो जाती। लगभग ऐसा ही हाल अपना भी रहा। जैसे ही घर वाले कोई उम्मीद बांधते, अपन तुरंत फेल हो जाते।

क्योंकि मैने बचपन में ही कही पढ़ लिया था कि उम्मीद यानि किसी से अपेक्षा रखना दुख देता है। हमने यह समस्या जड़ से खत्म की।

इसी के चलते लोगों ने मुझसे उम्मीद रखना बंद की और सरकार ने ये बसें यानी परिवहन निगम! यही कहानी घर घर की थी, मतलब हर आम आदमी की!

बाद में हम लोग भी अपना कस्बा छोड़कर शहर में आ गए।

जहां पहली बार रेल से सामना हुआ। इधर रेलों ने भी अपना साथ पूरा निभाया। कभी मै लेट हो जाता तो कभी रेल! मै कभी वक्त पर किसी भी मंजिल पर पहुंच नहीं पाया। अपनी जिंदगी की वेटिंग कभी क्लियर नहीं हुई। कोई vip सिफारिश भी नहीं मिल सकी कि सीट

कन्फर्म हो। मै प्लेटफार्म पर ही ठहरा रहा। जहां भीड़ थी, अजीब सी बदबू थी और सामने बड़ी सी सीढ़ियां!

वो भी एक प्लेटफॉर्म से ऊपर चढ़ाती तो लगता कि अब मैं दूसरों से ऊपर आ गया हूं। लेकिन अफसोस कि यही सीढ़ियां दूसरे प्लेटफॉर्म पर उतार भी देती थी। यानी मै वही का वही रहा। एक प्लेटफॉर्म से निकलकर दूसरे प्लेटफॉर्म पर! अपने कही पहुंच जाने के सभी प्रयास फेल रहे।

आम आदमी की नियति मैं स्वीकार चुका था। वक्त बदला, एक दिन मुझ बिल्ली के भाग्य से छींका टूटा! और मुझे फ्लाइट से जाने का मौका मिला।

हवाई जहाज मैने केवल उड़ते हुए ही देखे थे। मन में खुशी थी कि चलो जमीन पर भले मै कुछ न कर पाया। अब आसमान में उड़ कर दिखाऊंगा। अपनी जेब की गहराई आसमान की ऊंचाई नाप लेगी।

लेकिन आम आदमी का खास हो जाना किसी को रास नहीं आता। मै पांच घंटे से एयरपोर्ट पर हुं और पता चला है कि फ्लाइट फेल यानी कैंसल हो गई है। मै जमीन का जमीन पर हूं। लोग बता रहे है कि नियम कानून की कोई समस्या है। बदली वाले पायलट नहीं मिल रहे है। कंपनी का निजाम इस जाम का जिम्मेदार है।

मगर मै जानता हूं, इन लोगों को मेरे आने की खबर होगी। जब बस और रेल ने मुझे धक्के खिलवाए तो फ्लाइट वाले अपना फर्ज क्यों न निभाए? समानता का व्यवहार संविधान में लिखा है। बस हो या फ्लाइट, आम आदमी के साथ बखूबी समानता निभा रहे है। कुछ दिलजले इसे व्यवस्था का फेल होना बता रहे है। लेकिन

मै तो खुश हूं कि आखिर हर जगह फेल होते मुझ आम आदमी का साथ कोई तो दे रहा है! फिर चाहे फेल होने में ही क्यों न हो?

योग साधना-2

कर्मयोगी

(वरिष्ठ पत्रकार और योग जानकार)

विदेशी साधकों का अध्यात्म और हिमालय का मौन

एक समय यदि भारत को विश्व गुरु कहा जाता था तो उसकी तार्किक वजह थी। आर्थिक समृद्धि से उपजी विसंगतियां भारत की सॉफ्ट पावर अध्यात्म पश्चिमी जगत समेत पूरी दुनिया को सम्मोहित करता रहा है। प्राच्य विद्या, योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आध्यात्मिक ऊर्जा भारत की बहुमूल्य धरोहर सदैव रही है। यही वजह है कि जीवन के सत्य की तलाश में तमाम विदेशी लोग भारत आते रहे हैं। हालांकि, विडंबना यह है कि आज आम भारतीय उन पश्चिमी जीवन मूल्यों व भौतिक लिप्साओं को अपना आदर्श मानने लगा है, जिससे पश्चिमी जगत उकता चुका है।

ऋषिकेश से कोई चालीस किलोमीटर की दूरी पर टिहरी गढ़वाल के अंतर्गत आने वाले सिंगथाली गांव के निकट बड़ी संख्या में विदेशी योगिनियों की सक्रियता और आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र बना हुआ था। जो स्थानीय लोगों के लिए कौतुहल का विषय बना रहा। इन विदेशी साधकों की हिमालय की शक्तियों को जानने की तीव्र आकांक्षा मुखरित हो रही थी। ये साधक कभी देवप्रयाग के संगम में श्रद्धानत होकर डुबकी लगाते, कभी ऋषिकेश तो कभी हरिद्वार के गंगा तटों पर सूर्य साधना करते नजर आते। उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों 'अवेकन-द जर्नी ऑफ सेल्फ-डिस्कवरी ' मुहिम में भाग लेने दुनिया के तीस देशों के करीब डेढ़ सौ साधक उत्तराखंड आए हुए थे। इन योग साधकों में अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, चीन, साइप्रस, सिंगापुर, ताइवान, हांगकांग, मलेशिया, यूएई, वियतनाम, मॉरीशस, त्रिनिदाद और यूरोप के कई देशों की योगनियां शामिल थीं। सही मायनों में हिमालय एक ऐसा पवित्र स्थान रहा है, जहां प्राचीन योगिक ज्ञान, ऊर्जा प्रक्रियाएं और चेतनाधारित साधनाएं अपने शुद्धतम रूप में मानव कल्याण के लिए प्रवाहित होती रही हैं। निस्संदेह, दुनियाभर से आने वाले योग साधकों की सक्रिय भागीदारी हिमालयीय परंपरा में बढ़ते वैश्विक विश्वास और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय की भागीदारी का प्रमाण है।

इस बहु-स्तरीय हिमालयीय साधना में साधक प्रत्येक दिन शरीर, मन, ऊर्जा और चेतना के नए आयाम खोलने के प्रयास करते हैं। हिमालय सिद्ध अक्षर के मार्गदर्शन में प्रतिभागी प्राचीन तकनीकों और गहन रूपांतरकारी अनुभवों से गुजरते हैं। वे दिन की शुरुआत शास्त्रीय हिमालयी योग परंपरागत आसन अभ्यास से करते हैं। फिर वे अपनी मुख्य नाड़ियों इड़ा,पिंगला और सुषुम्ना को सक्रिय करने हेतु श्वास तकनीकों का सहारा लेते हैं। वहीं मन-शरीर सक्रिय करने के लिये सूर्य साधना व पंचतत्व संयोजन का आश्रय लेते हैं। हिमालय की शांत वादियों में कुदरत के मौन के साथ गंगा तट पर ये साधनाएं पूरी की जाती हैं। वास्तव में, ये विदेशी साधक आंतरिक, बाह्य व अवचेतन की

जागरूकता के लिये दुर्लभ हिमालयी अभ्यासों का सहारा लेते हैं। जिसमें श्वास नियमन से शरीर के ऊर्जा चैनलों को मजबूती दी जा सके। निस्संदेह, श्वास साधनाएं मनुष्य में जागरूकता, स्थिरता और अंतर्ज्ञान को परिष्कृत करती हैं। ध्यान साधना की ये तकनीक आम से हटकर खास सिद्ध परंपरा की तकनीकें रही हैं। जिन्हें अब जन-जन तक पहुंचाने का ऋषि कर्म हिमालय सिद्ध द्वारा किया जा रहा है। देश-विदेश में इन प्रयासों का सकारात्मक प्रतिसाद भी मिल रहा है।

ऐसे अभियानों के जरिये मानव ऊर्जा संरचना संवर्धन, यौगिक चेतना में विस्तार, प्रकृति की कॉस्मिक ऊर्जा और उसके जीवन पर प्रभाव का मूल्यांकन किया जाता है। जिसके जरिये प्रतिभागी सीखते हैं कि ध्यान व श्वास क्रियाओं का अपने जीवन के निर्णयों और जीवन शुद्धि में कैसे उपयोग किया जाए। इसके साथ ही ध्यान एवं स्थिरता प्रशिक्षण के लिये त्राटक, पूर्णिमा व जल तत्व ध्यान, मेरुदंड जागरण, उच्च आवृत्ति के साथ श्वास सामंजस्य, हिमालयी मौन साधन का सहारा लिया जाता है। लंबी साधना और सात्विक जीवन के अंगीकार के बाद ये अभ्यास साधक के लिये प्रखर बुद्धि व गहरी अंतर्दृष्टि के द्वार खोलते हैं। यही वजह है कि योग के गूढ़ लक्ष्यों को हासिल करने के लिये दुनिया के कोने-कोने से आये साधक सनातन परंपरा के स्रोत और गंगा,यमुना और सरस्वती के संगम देवप्रयाग की यात्रा से सम्मोहित होते हैं। जहां वे जल-तत्व साधना, कर्म-शुद्धि अनुष्ठान, पंचतत्व आह्वान, पारंपरिक सिद्धा अर्पण करते हैं।

वास्तव में, हिमालय के ये स्थल ऊर्जा के गहन संयोग से युक्त हैं,जो कि साधक की साधना के फलकों को कई गुना बढ़ा देते हैं। सही मायनो में, विदेशी साधक इस तरह के योग आयोजनों के जरिये चेतना विकास, हिमालयीय दर्शन, कर्म सिद्धांत दृष्टि, समृद्धि दृष्टि, सूर्य-चंद्र ऊर्जा संतुलन, जीवन को कॉस्मिक चक्रों के अनुरूप जीने की कला सीखते हैं। जो साधकों के जीवन में परिवर्तनकारी बताए जाते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पिछले दिनों उत्तराखंड में दुनिया के तीस देशों से आए ये डेढ़ सौ साधक साधना के दिनों में हिमालयी संस्कृति के अनुरूप परंपरा, पवित्रता और शुचिता का अनुपालन करते रहे हैं। इस दौरान तामसिक भोजन व पेय से ही नहीं बल्कि प्याज, लहसुन व कैफीन का भी परहेज करते रहे हैं। दरअसल, हिमालयी साधना की परंपरा में गहन ऊर्जा साधना और ध्यानावस्था की सार्थकता के लिए वैचारिक व खानपान की पवित्रता को प्राथमिकता दी जाती। बेंगलुरू स्थिति योग अनुसंधान संस्थान अक्षर योग केंद्र के सूत्रधार हिमालय सिद्ध अक्षर की उपस्थिति योग साधकों को ऊर्जा दे जाती है। पिछले वर्षों में संस्थान विभिन्न आसनों के प्रदर्शनों के जरिये विश्व विख्यात गिनीज बुक वर्ल्ड रिकॉर्ड में 21 रिकॉर्ड दर्ज करा चुका है। जिसके बाद संस्थान के अनुयायियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।

हिमालय सिद्ध अक्षर बताते हैं कि योग को वैश्विक मान्यता मिलने के बाद दुनिया के लाखों साधक भारत आकर योग की जन्मभूमि के अहसास महसूस करना चाहते हैं। दरअसल, भौतिक सुखों की विसंगतियां इनको उपभोक्तावादी संस्कृति से विमुख कर रही हैं। वे सुकून की तलाश में योग की जन्मभूमि भारत के सात्विक सम्मोहन में बंधे चले आते हैं। उन्हें दुनिया की कोई भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व धार्मिक सीमाएं बांध नहीं पातीं। विडंबना यह है कि विदेशों में लोग जिस भौतिक संस्कृति का परित्याग करने को प्रयासरत हैं, भारत में उसका अनुकरण शान समझा जाता है। ऐसे में योग का सान्निध्य निस्संदेह,हमें सुखमय जीवन की राह दिखाता है। यही मनुष्य के तन-मन की शांति और आध्यात्मिक उत्थान की राह भी है। ऐसे में भारत सरकार व हिमालयी राज्यों की सरकारों का भी दायित्व बन जाता है कि हिमालय की अस्मिता की रक्षा का प्राणपण से प्रयास करें। विकास का वो मॉडल अपनाए जो प्रकृति व हिमालय की आत्मा को चोट न पहुंचाए। यह इसलिए भी जरूरी है क्योंकि देशी-विदेशी साधक स्थानीय अर्थव्यवस्था के उत्थान में भी योगदान देते हैं।

एनएचएआई ने 500 करोड़ रुपए का एस्टीमेट बनाकर भेजा स्टेट ऑफिस

21 किमी में बरेठा घाट से तवा परियोजना के गेट तक बनेंगे पांच एनिमल अंडरपास

बैतूल। बैतूल-इटारसी फोरलेन के बरेठा घाट सेक्शन में सड़क निर्माण को लेकर अब राह खुलते नजर आ रही है। दरअसल 21 किलोमीटर के इस हिस्से में वन्य प्राणियों का आवागमन प्रभावित नहीं हो, इसको लेकर हाईकोर्ट में मामला लंबित है। जिसके कारण निर्माण रुका हुआ है। लेकिन नेशनल वन्य प्राणी बोर्ड की रिपोर्ट के बाद सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और वन विभाग ने यहां पर 5 एनीमल अंडरपास बनाने के संशोधन करते हुए रिपोर्ट दी है। जिसके बाद एनएचएआई ने पांच जगहों पर एनीमल अंडरपास के साथ 21 किलोमीटर सडक़ बनाने का एस्टीमेट मंजूरी के लिए भोपाल में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मुख्यालय भेजा है। बताया जा रहा है कि फिलहाल काम शुरू नहीं किया जाएगा। काम शुरू तभी किया जाएगा जब हाईकोर्ट से आदेश हो जाएंगे। बता दे कि नागपुर-भोपाल जैसे दो बड़े शहरों को जोडऩे वाले नेशनल हाइवे पर अब तक अवरोध बैतूल जिले में स्थित बरेठा घाट बचा है। भोपाल और नागपुर के बीच आवागमन को सुगम और तेज करने के लिए वैसे तो कई साल पहले बैतूल से नागपुर और बैतूल से भोपाल के लिए फोरलेन नेशनल हाईवे को एक साथ मंजूरी मिली थी। इसमें से बैतूल से नागपुर तक 173.3 किलोमीटर लंबे नेशनल हाईवे (एनएच-47) बहुत पहले बन कर तैयार हो चुका। वहीं बैतूल से भोपाल तक 178.6 किलोमीटर लंबा नेशनल हाईवे (एनएच-46) में बरेठा घाट सेक्शन का काम अभी भी शुरू नहीं हो पाया है। जिसके कारण वाहन चालकों को परेशानियों का सामना करना पड़ता है।

दो की जगह पांच जगहों पर बनेगे एनिमल अंडरपास – अब 2 की जगह 5 जगहों पर अंडरपास बनाने की बात सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और वन अमले की ओर से कही गई है। बताया जा रहा है कि यह एनीमल अंडरपास बरेठा घाट से लेकर तवा परियोजना के गेट तक बनाए जायेगे। तीन जगहों को इसमें वन विभाग और सतपुड़ा टाइगर के सुझाव पर बढ़ाया है। जिससे कि वन प्राणियों को परेशानियां नहीं हो और वे सुरक्षित रह सके। एनएचएआई के इंजीनियर प्रकाश भारद्वाज ने बताया कि सतपुड़ा टाइगर रिजर्व की ओर से पांच जगहों पर एनीमल अंडरपास बनाने के इस प्रस्ताव और आवेदन को एनओसी दे दी है। हमने 500 करोड़ का एस्टीमेट मंजूरी के लिए भेजकर टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है। फिलहाल काम शुरू नहीं होगा, हाईकोर्ट से अंतिम निर्णय आने पर ही काम शुरू किया जाएगा।

हाईकोर्ट में दायर पीआईएल के बाद से रूका है काम

बताया जा रहा है कि बैतूल से इटारसी के बीच 650 करोड़ से 72 किलोमीटर फोरलेन बनाया जा रहा है। इसके लिए 2011 में स्वीकृति हुई थी, 2015 में ट्रांसटाय कंपनी ने काम शुरू किया, लेकिन ब्लैक लिस्टेड होने के बाद 2017 में लांग जियांग जितेंद्र सिंह एंड कंपनी ने काम शुरू किया था। इसके बाद जबलपुर हाईकोर्ट में दायर एक पीआईएल के बाद यहां वन्य जीवों की आवाजाही प्रभावित होने के ऑब्जेक्शन के बाद से 2021 से काम रुका है। बताया जा रहा है कि घाट सेक्शन के हिस्से से आवाजाही में खासी परेशानी होती है। आए दिन यहां हादसे होते रहते हैं वहीं ट्रकों के पलटने से घंटों तक जाम लगना भी आम बात है। यही कारण है कि बरेठा घाट अभी तक वाहन चालकों के लिए दुखदायी बना हुआ है। लेकिन हाईकोर्ट में मामला लंबित होने से बरेठा घाट की सडक़ का काम शुरू नहीं हो पा रहा है।

वन जीव बोर्ड कमेटी ने किया संशोधन

वन्य जीव बोर्ड ने इस ऑब्जेक्शन के बाद तीन सदस्यीय कमेटी बनाई थी। आखिरकार इस कमेटी ने हाल ही में फोरलेन भी बन जाए और वन्य प्राणियों खासकर बाघों का आवागमन प्रभावित नहीं हो, इस संबंध में दो जगहों पर लंबे एनीमल अंडरपास सडक़ के नीचे बनाने संबंधी संशोधन फोरलेन के ड्राइंग डिजाइन में करने की रिपोर्ट सौंपी। इसके बाद एनएचएआई की ओर से सतपुड़ा टाइगर रिजर्व और स्थानीय वन अमले ने भी यहां पर एनओसी के लिए आवेदन दिया। एनएचएआई ने पांच जगहों पर एनीमल अंडरपास का संशोधन करते हुए इसका एस्टीमेट और ड्राइंग डिजाइन भोपाल में नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया के मुख्यालय भेज दी है।

टोल भी चुका रहे, सुविधा भी नहीं

21 किमी का मार्ग नहीं बनने से वाहन चालक परेशान है। वाहन चालकों का कहना है कि कुंडी टोल नाके पर वाहनों से शुल्क लिया जा है, जबकि 21 किलोमीटर सडक़ बनी नहीं है। यहां से रोजाना 4 हजार वाहन गुजर रहे हैं। जिनसे शुल्क लिया जा रहा है। इसके बावजूद बरेठा घाट की सडक़ उखड़ी हुई है। सबसे ज्यादा परेशानी बरेठा घाट में होती है। यहां आए दिन हादसे होते रहते हैं, वहीं ट्रकों के पलटने से घंटों तक जाम लगना भी आम बात हो गई है। जिसके कारण वाहनों के आवागमन के दौरान दिक्कते होती है। सबसे ज्यादा परेशानी तब उठानी पड़ती है, जब कोई बड़ा वाहन घाट सेक्शन में पलट जाये और लंबा जाम लगने से लोगों को घंटो जाम में फंसे रहना पड़ता है।

इनका कहना है –

हमारी ओर से एनीमल अंडरपास और सडक़ बनाने के लिए लगभग 500 करोड़ का एस्टीमेट मंजूरी के लिए भेज दिया है। टेंडर प्रक्रिया भी इसके साथ ही शुरू कर दी है। फिलहाल काम शुरू नहीं किया जाएगा। काम शुरू तभी किया जाएगा जब हाईकोर्ट से आदेश हो जाएंगे। एनबीडब्ल्यूएल की तीन सदस्यीय कमेटी और वन विभाग के अनुसार ही इसमें एनीमल अंडरपास बनाए जाएंगे।

– **मनीष मीणा,** प्रोजेक्ट डायरेक्टर, एनएचएआई

रामलला रामकथा आयोजन समिति की बैठक आयोजित

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने दिया हरसंभव मदद का आश्वासन

बैतूल। आगामी 19 से 25 दिसंबर तक शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम में होने वाली रामलला रामकथा की तैयारियां अब युध्द स्तर पर जारी हैं। इस संबंध में आज बुधवार को

श्री रामलला रामकथा आयोजन समिति के सदस्यों ने एक बैठक का आयोजन समिति संरक्षक और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष हेमंत

खंडेलवाल के पूर्व निवास पर किया। जिसमें इस आयोजन की रूपरेखा तथा अन्य मसलों पर उपस्थित धर्म प्रेमी बन्धुओं द्वारा विस्तार से चर्चा की गई। बैठक की शुरुआत में आयोजन समिति के सदस्य सुनील द्विवेदी ने सभी के समक्ष रामकथा आयोजन की विस्तार से रूपरेखा रखी। इसके पश्चात समिति के सदस्य बलराम जसूजा, मनोज भार्गव, योग शिक्षक रोशनलाल मौखड़े, योग प्रशिक्षक सुनील कुबड़े, त्रिपाठी सर आदि ने अपने-अपने विचार रखें। इसके पश्चात नपा बैतूल अध्यक्ष पार्वती बाई बारस्कर ने आयोजन को लेकर नगर पालिका की ओर से हरसंभव मदद का आश्वासन देते हुए कहा कि वे स्वयं अधिक से अधिक समय रामकथा में रहेंगी। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल ने कहा कि यह हम सब भारतीयों के लिए बड़े गर्व की बात है कि सादियों के संघर्ष के बाद हमारी संस्कृति, श्रद्धा और गौरव का केंद्र अयोध्या का राममंदिर पूर्ण हुआ और गत 25 नवंबर को हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और आरआरएस के सरसंघचालक मोहन भगवत जी द्वारा शिखर पर भगवा धर्म ध्वजा लहराई गई और इसी गौरवशाली धर्म ध्वजा को लेकर राम जन्मभूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष डॉ. रामविलास वेदांतीजी बैतूल पधार रहे हैं। अब इस अवसर को ऐतिहासिक और चिरस्थाई बनाने के लिए बैतूल में इस रामकथा का कार्यक्रम होने जा रहा है। यह हम सब बैतूलवासियों के लिए बड़े गर्व की बात है। उन्होंने आयोजन को लेकर हर संभव मदद देने का आश्वासन दिया। यहां उल्लेखनीय है कि अयोध्या से धर्म ध्वजा लेकर बैतूल आ रहे रामजन्म भूमि न्यास के पूर्व अध्यक्ष श्री रामविलास वेदांती महाराज की रामलला रामकथा 19 से 25 दिसंबर तक आयोजित होना है। समिति के अनुसार 17 दिसंबर की शाम को परमपूज्य वेदांती जी महाराज का बैतूल आगमन होगा। जिन्हें रेलवे स्टेशन से हाउसिंग बोर्ड गंज स्थित संत निवास तक गाजे-बाजे के साथ लेकर आया जाएगा। 18 दिसंबर को दोपहर 1 बजे सभी रामभक्त महिला- पुरूष न्यू बैतूल स्कूल ग्राऊंड में एकत्रित होंगे। यहां हनुमान मंदिर से धर्म ध्वजा यात्रा और कलश यात्रा धूमधाम से निकलेगी। जो थाना चौक, लल्ली चौक, बस स्टैंड, राजा भोज चौक, शिवाजी चौक होते हुए शिवाजी ओपन ऑडिटोरियम पहुंचेगी। यहां धर्मध्वजा की अस्थाई स्थापना होगी। इसके बाद सभी कलश और धर्म ध्वजा की सामूहिक आरती होगी। 19 दिसंबर से 24 दिसंबर तक लगातार 6 दिन रामलला रामकथा संत वेदांतीजी के श्रीमुख से दोपहर 2 से 6 बजे तक होगी। 25 दिसंबर को समापन कार्यक्रम में कथा सुबह 11 बजे से 2 बजे तक और इसके बाद हवन और भंडारा होगा। शाम को धर्म ध्वजा की स्थई स्थापना मंदिर में की जाएगी।

ठेकेदार ने रातोंरात बना दी सड़क और डाल दिया छत

रेलवे जीएम के आने की आपाधापी में गुणवत्ता को किया दरकिनार

आमला। 24 दिसंबर को रेलवे के जीएम का आमला में संभावित दौरा होना है, ऐसे में डिवीजन के कई बड़े वरिष्ठ अधिकारियों का यहां डेराडला हुआ है। अमूमन जैसा कि होता रहा है, रेलवे के जीएम के दौरे के दौरान स्टेशन, ऑफिस, मकान आदि को खूब चमकाया जाता है और इस बार भी ऐसा ही सब चल रहा है। आमला में लगभग 2 वर्षो से अमृत भारत योजना के तहत स्टेशन परिसर में करोड़ों की लागत से निर्माण कार्य चल रहे है। जिसके लिए ठेकेदार द्वारा बेहद धीमी गति से कार्य किया जा रहा था, किंतु जीएम के संभावित दौरे को लेकर पिछले दिनों डिवीजन के डीआरएम ने यहां मौका मुआयना कर अपनी नाराजगी भी दिखाई थी। जिसके बाद ठेकेदार ने आनन-फानन में रात दिन कार्य करना शुरू भी कर दिया

और काम में तेजी दिखाने के लिए यहां बीती रात एक निर्माणाधीन दफ्तर की छत भी ढाल दी। साथ ही यहां रातों-रात एक सडक़ का भी निर्माण कर दिया गया। अब जीएम के आने की आपाधापी में गुणवत्ता का कितना ध्यान रखा जा रहा होगा, अंदाजा लगाया जा सकता है। पूरे स्टेशन परिसर में यात्रियों की सुविधाओं के लिए रेलवे द्वारा कोई ध्यान नहीं रखा जा रहा है। आमला स्टेशन परिसर में उन स्थलों को भी रंग रोगन किया जा रहा है, जो अभी महज कुछ महीनो में ही तोड़ा जाना है। रेलवे सूत्रों ने बताया है कि आमला रेलवे स्टेशन प्लेटफार्म क्रमांक 3 एवं 4 पर बना शौचालय यात्रियों की सुविधा के लिए काम में नहीं आ रहा है, किंतु यहां कोई ध्यान नहीं दे रहा है। इसके अलावा जंबाड़ा रेलवे ट्रैक पर वार्ड क्रमांक 5 से लगे रेलवे के हिस्से में शहर के आधे हिस्से की नाली निकासी का पानी यहां एकत्र हो रहा है, जिससे यहां रेलवे ट्रैक को नुकसान होने की भी संभावना है, किंतु यहां अधिकारी कोई ध्यान नहीं दे रहे हैं। निर्माण कार्यो के संबंध में रेलवे अधिकारी एडीईएन के दफ्तर पहुंचे तो उन्होंने मीडिया को देखकर अपने दफ्तर का दरवाजा बंद कर लिया और मीडिया के किसी भी सवालों का जवाब देने से इनकार कर दिया।

साउथ एशियन पीस कांफ्रेंस में शामिल होगी टीम गौरी

12 से 14 दिसंबर तक गोपालपुर उड़ीसा में जुटेंगे देशभर से डेलीगेट्स

बैतूल। एक बार फिर मध्यप्रदेश का नेतृत्व करते हुए जिले की सामाजिक कार्यकर्ता एवं पत्रकार गौरी बालापुरे पदम अपनी टीम के साथ साउथ एशिया पीस कांफ्रेंस में शामिल हो रही है। गोपालपुर उड़ीसा में 12 से 14 दिसंबर तक आयोजित कॉन्फ्रेंस के लिए बैतूल सांस्कृतिक सेवा समिति का दल 10 दिसंबर को दोपहर में बैतूल से गोपालपुर के लिए रवाना हुआ। रेलवे स्टेशन पर पहुंचे दल को उप

स्टेशन प्रबंधक अशोक कुमार झा ने शुभकामनाएं दी। साउथ एशिया पीस कांफ्रेंस में विभिन्न विषयों पर देश के अलग अलग प्रांतों से आए डेलीगेट्स चर्चा करेंगे। जिनमें खास तौर पर हमारे जीवन में नैतिक मूल्यों की भूमिका, दक्षिण एशियाई देशों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवा, आतंकवाद और उग्रवादः क्षेत्रीय सुरक्षा एवं सहयोग के लिए खतरे, युद्धग्रस्त विश्व और दक्षिण एशिया में लोकतंत्र पर इसका प्रभाव, विश्व परिदृश्य में भारत की स्थिति का आलोचनात्मक विश्लेषण आदि विषयों पर होगा मंथन साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से एक दूसरे की संस्कृति साझा करेंगे। तीन दिवसीय कॉन्फ्रेंस में मध्यप्रदेश की डेलीगेट्स टीम में श्रीमती पदम के नेतृत्व में प्रचीति कमाविसदार, उषा देशमुख, गीतु मवासे, मयंक मौसिक, रीता गुजरे, सियांशी गुजरे, पूर्वांशी गुजरे शामिल हो रहे है। यह दल 11 दिसंबर की रात गोपालपुर पहुंचेगा और 16 दिसंबर को वापस होगा।

सतपुड़ा वैली के तनिष्क सिंह सोलंकी ने राष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया बैतूल का नाम

अंडर-19 क्रिकेट टीम में चयनित होकर दिखाई ऑल-राउंडर प्रतिभा

बैतूल। सतपुड़ा वैली स्कूल के होनहार छात्र तनिष्क सिंह सोलंकी ने राष्ट्रीय स्तर पर बैतूल का नाम रोशन किया है। तनिष्क सिंह सोलंकी को मध्य प्रदेश की अंडर-19 क्रिकेट टीम में चुना गया है। यह टीम हिसार, हरियाणा में आयोजित होने वाले नेशनल क्रिकेट टूर्नामेंट में हिस्सा ले रही है। तनिष्क सिंह सोलंकी की यह उपलब्धि उनकी मेहनत और प्रतिभा का परिणाम है। उन्होंने जिला और राज्य स्तर पर शानदार प्रदर्शन कर अपनी ऑल-राउंडर क्षमता साबित की और अब राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है।

सतपुड़ा वैली स्कूल की डायरेक्टर श्रीमती दीपाली निलय डागा, प्राचार्य ऋतु वाजपेयी मैम, प्रबंधक शिव शंकर मालवी और स्कूल परिवार ने तनिष्क सिंह सोलंकी को इस शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी और उनके उज्वल भविष्य की कामना की।

13 दिसंबर को लगेगा रक्तदान व स्वास्थ्य शिविर

बैतूल। नगर के विवेकानंद वार्ड में हिंदू सम्मेलन के अंतर्गत 13 दिसंबर को रक्तदान शिविर एवं निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यह सेवा कार्यक्रम सुबह 10 बजे से ग्रीन सिटी विवेकानंद वार्ड में शुरू होगा। शिविर में प्रमुख रूप से सिटी हॉस्पिटल लिंक रोड बैतूल के चिकित्सक डॉ. अरुण जयसिंगपुरे, चौहान मल्टीस्पेशियलिटी हॉस्पिटल गंज बैतूल से डॉ. महेन्द्र चौहान एमडी और डॉ. श्रीमती अरुणा चौहान एमडी अपनी सेवाएं देंगी। शिविर प्रभारी दशरथ सिंह ठाकुर, कांतु प्रजापति और कुलदीप माहोरे ने बताया कि मानव कल्याण से बड़ा कोई धर्म नहीं होता, इसलिए अधिक से अधिक संख्या में लोग पहुंचकर रक्तदान कर समाज सेवा में यथासंभव योगदान दें। उन्होंने कहा कि रक्त एक ऐसा अमूल्य दान है जो किसी जरूरतमंद की जान बचा सकता है। जगदीश साहू और विजय धोटे ने बताया कि निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर में बी.पी., शुगर सहित विभिन्न रोगों का परीक्षण किया जाएगा तथा गंभीर बीमारियों के बारे में सलाह और उचित उपचार संबंधी मार्गदर्शन भी दिया जाएगा।

भाजपा ने भैंसदेही नगर एवं प्रभात पट्टन मंडल की कार्यकारिणी की घोषित

बैतूल। भाजपा के संभागीय संगठन प्रभारी कांतदेव सिंह, केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं सांसद दुर्गादास उइके, जिला संगठन प्रभारी सुजीत जैन, जिलाध्यक्ष सुधाकर पंवार, विधायक मुलताई चंद्रशेखर देशमुख व विधायक भैसदेही महेन्द्रसिंह चौहान की सहमति से भैसदेही नगर मंडल अध्यक्ष दिलीप घोरे और प्रभातपटटन मंडल अध्यक्ष सतीश धाकड ने मंडल कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। घोषित मंडल समिति में छह उपाध्यक्ष, दो महामंत्री, छह मंत्री सहित एक कोषाध्यक्ष व अन्य दायित्व की घोषणा की गई है। भैसदेही नगर मंडल की घोषित मंडल समिति में उपाध्यक्ष डा.अभिषेक मिसर (भैसदेही), आनंद राठौर (भैसदेही), मंगलमूर्ति आर्य (भैसदेही), संतोष पाल (भैसदेही), पंकज नरवरे (चिचोलीढाना), माधुरी सुनील गुरव (भैसदेही) महामंत्री दिनेश कोसे (सिवनी), सतीश मालवीय (कौडिया) मंत्री अर्चना अमित उघडे (भैसदेही), कुसूम गंगाधर झरबडे (भैसदेही), वंदना योगेश डागोर (बडगांव), अंजनी संतोष भावरे (माजरवानी), पवन लोखंडे (भैसदेही), काशीराम भुसूमकर (हरिमउ), कोषाध्यक्ष राजू कुंभारे (घोघामा), सह कोषाध्यक्ष प्रदीप धुले (भैसदेही), सुरजीत सिंह ठाकुर (भैसदेही) कार्यालय मंत्री, सह कार्यालय मंत्री रवि वागद्रे (पोहर) सोशल मीडिया प्रभारी चंचल पंडाग्रे (भैसदेही), सह सोशल मीडिया प्रभारी अंकित राजूरकर (भैसदेही) को बनाया गया है। प्रभातपटटन मंडल की घोषित मंडल समिति में उपाध्यक्ष कृष्णा गायकवाड (घाटबिरोली), सुरेश देशमुख (सिरखेड), धनेश्वर काले (तिवरखेड), चंदू देशमुख (प्रभातपट्टन), सह कार्यालय मंत्री गणेश कोल्हे (प्रभातपट्टन), सोशल मीडिया प्रभारी निलेश भोपते (वंडली), सह सोशल मीडिया प्रभारी दीपक फाटे (खेडी रामोसी), मीडिया प्रभारी रवि गायकवाड (घाटबिरोली), सह मीडिया प्रभारी चंदन बरखाडे (बोरगांव शेरगढ) एवं देवेन्द्र सातपुते (अमरावतीघाट) को आईटी प्रभारी बनाया गया है।

लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में 21 से 26 दिसंबर तक लगेगा आदि बाजार

कलेक्टर ने निरीक्षण कर सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त रखने के दिए निर्देश

बैतूल। केंद्र सरकार के ट्राईफेड द्वारा 21 दिसंबर से 26 दिसंबर तक लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आदि बाजार का भव्य आयोजन किया जाएगा। आदि बाजार में प्रदेश की प्रचलित महेश्वर और चंदेरी साडयि़ों से लेकर बांस कला, सजावटी पौधों की दुकान, वूलन क्लॉथ्स, हैंडलूम, फारेस्ट प्रोडक्ट्स, विभिन्न शिल्प और बैतूल जिले की पहचान बन चुके भरेवा शिल्प के हैंडीक्राफ्ट यहां लोगों को देखने और खरीदने को मिलेंगे। इसके साथ ही फूड फेस्टिवल का भी आयोजन किया जाएगा, जिसमें मिलेट से बने पारंपरिक और नवीन उत्पादों के 15 स्टॉल लगाए जाएंगे। वहीं ट्रायफेड के 25 स्टॉल, एनआरएलएम के 10 स्टॉल लगाए जाएंगे। आदि बाजार में छोटे-छोटे झूले और फन एक्टिविटीज भी आयोजित की जाएगी। इस अवसर पर ट्राइबल के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होंगे। बुधवार को कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी ने स्टेडियम पहुंचकर आयोजन स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने बताया कि आदि बाजार का शुभारंभ केंद्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उईके के मुख्य आतिथ्य में किया जाएगा। इस दौरान कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी तैयारियां तय समय-सीमा में पूर्ण कर ली जाएं। उन्होंने नगर पालिका को आदि बाजार में लाइटिंग, सफाई और आवश्यक सुविधाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। वहीं एसडीएम को आयोजन के दौरान कानून व्यवस्था पर कड़ी निगरानी रखने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री सूर्यवंशी ने जनजातीय कार्य विभाग के सहायक आयुक्त को स्थानीय जनजातीय कला पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए जरूरी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए।

नर्मदापुरम संभागायुक्त के सख्त निर्देश, आईसीयू यूनिट शीघ्र शुरू किया जाए

स्वास्थ्य अधिकारियों ने सिविल अस्पताल आमला का किया निरीक्षण

बैतूल। नर्मदापुरम संभागायुक्त के.जी. तिवारी के निर्देशानुसार ग्रामीण क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराए जाने के अनुक्रम में बुधवार को स्वास्थ्य विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने सिविल अस्पताल आमला का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अस्पताल की व्यवस्थाओं का जायजा लिया गया। जनप्रतिनिधियों व व्यापारी संघ द्वारा लंबे समय से अस्पताल में आईसीयू शुरू किए जाने की मांग रखी जा रही थी। इसको ध्यान में रखते हुए संभागायुक्त के निर्देशों के क्रम में अस्पताल परिसर में अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य

अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने आईसीयू यूनिट शुरू करने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके साथ ही आशा सुपरवाइजर द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा भी की गई तथा मातृ शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण और जन स्वास्थ्य कार्यक्रमों के प्रगति पर चर्चा की। बैठक में जिला अस्पताल बैतूल के मेडिकल स्पेशलिस्ट डॉ. रोहित पराते सहित स्वास्थ्य विभाग के अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

स्वास्थ्य सेवाओं के व्यावसायीकरण के खिलाफ चलेगा राष्ट्रीय अभियान

रायपुर। पूरे भारत से 19 से ज़्यादा राज्यों के लगभग 350 प्रमुख स्वास्थ्य नेतृत्वकर्ता, एक्टिविस्ट्स, जनांदोलनों और समुदाय के प्रतिनिधियों की भागीदारी के साथ रायपुर, छत्तीसगढ़ में दो दिवसीय राष्ट्रीय स्वास्थ्य सम्मेलन संपन्न हुआ। सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य दिनोंदिन गंभीर होती जा रही कठिन स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने के साथ-साथ आम जनता के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए स्वास्थ्य व्यवस्था में नीतिगत बदलावों की मांग और जमीनी स्तर पर जन स्वास्थ्य आंदोलन को रणनीतिक रूप से मजबूत करना था। सम्मेलन की शुरुआत में स्वास्थ्य क्षेत्र में सरकार की मौजूदा प्राथमिकताओं और निजीकरण के बढ़ते खतरे की तरफ ध्यान दिलाते हुए जन स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए ठोस पहलकदमी पर जोर दिया गया। हाल ही में नीति आयोग के एक सर्कुलर को लेकर खास चिंता जताई गई, जिसमें जिला अस्पतालों के लिए पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) मॉडल को बढ़ावा दिया गया है। प्रतिभागियों ने चिंता जताई कि इससे देश की सबसे कमजोर और जरूरतमंद आबादी के लिए स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं तक पहुँच मुश्किल हो जाएगी।

मुख्य वक्ता कम्युनिटी मेडिसिन एक्सपर्ट डॉ. रितु प्रिया ने नज़रिए में बड़े बदलाव की मांग की। उन्होंने कहा, 'बहुत लंबे समय से, स्वास्थ्य के बारे में हमारी समझ सिर्फ़ डॉक्टरों और अस्पतालों तक ही सीमित रही है।' 'हमें समुदाय के तरीकों, पारंपरिक ज्ञान और हमारी आधी आबादी की सेवा करने वाले इनफॉर्मल डॉक्टरों की ताकत को वैलिडेट और इंटीग्रेट करना होगा। एक सच्चा स्वस्थ समाज ज़मीन से बनता है, ऊपर से नीचे थोपा नहीं जाता।'

ग्रीन नोबेल अवार्डी प्रफुल्ल सामंत्रे ने कहा, 'हमारी सरकार का मौजूदा रास्ता सिर्फ़ जनविरोधी नीतियों का निर्माण नहीं है; यह उस संवैधानिक ताने-बाने पर हमला है जो बराबरी और समावेशी मूल्यों का वादा करता है। वे सुनियोजित तरीके से निजी लाभों के लिए जन स्वास्थ्य का व्यापार कर रहे हैं, और आयुष्मान कार्ड जैसी पॉलिसी मरीज़ों से ज़्यादा कॉर्पोरेट घरानों को फ़ायदा पहुंचाने में काम आ रही है।'

सम्मेलन में तय किया गया कि व्यावसायिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर एक पखवाड़ा अप्रैल, 2026 में मनाया जाएगा। व्यावसायिक और पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर एक राष्ट्रीय जन स्वास्थ्य सम्मेलन जयपुर में आयोजित किया जाएगा। स्वास्थ्य सेवाओं के निजीकरण के खिलाफ और सार्वजनिक स्वास्थ्य की मजबूती के लिए राष्ट्रीय अभियान चलाया जाएगा। जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं के लिए स्वास्थ्य के विभिन्न मुद्दों पर आधारित एक सात दिवसीय कोर्स की शुरूआत मार्च, 2026 तक होगी। देश के 100 जिलों में मजबूत स्वास्थ्य कार्यकर्ता तैयार करेंगे। महिला हिंसा और महिला स्वास्थ्य तथा वंचित समुदायों के स्वास्थ्य के मुद्दों पर पृथक समूह का निर्माण होगा।

सम्मेलन के अंत में सभी प्रतिनिधियों के सामूहिक प्रयासों से तैयार जन स्वास्थ्य घोषणा पत्र जारी किया गया जिसमें जन स्वास्थ्य के मुद्दों का समर्थन करते हुए जमीनी और राष्ट्रीय स्तर पर सामूहिक प्रयास करने और सक्रिय गोलबंदी का संकल्प लिया गया। सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में विषय विशेषज्ञों अमितावा गृह, ऋतु प्रिया, डॉ. सुनीलम, प्रफुल्ल सामंतरा, कैलाश मीना, राजकुमार सिन्हा एवं समुदाय के प्रतिनिधियों के साथ ही पीड़ित और प्रभावित दिनेश रायसिंग, चुन्नी जी आदि ने विभिन्न सत्रों में अपने-अपने अनुभव साझा किए।

संक्षिप्त समाचार

दुग्ध समृद्धि सम्पर्क अभियान के तहत कलेक्टर श्री विश्वकर्मा की उपस्थिति में प्रशिक्षण सम्पन्न

रायसेन (निप्र)। रायसेन स्थित शासकीय पशु चिकित्सा एवं डेयरी विकास कार्यालय के सभाकक्ष में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा की अध्यक्षता में दुग्ध समृद्धि सम्पर्क अभियान के तहत जिला स्तरीय प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिसमें कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने पशु चिकित्सकों, सहायक पशु चिकित्सकों तथा गौ-मित्रों से कहा कि जिले में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के लिए जरूरी है कि पशुपालकों को पशु स्वास्थ्य, अधिक दूध देने वाली गाय-भैंस की नस्लों की जानकारी, उनके पोषण और टीकाकरण आदि की समुचित जानकारी हो। इसके लिए सभी आज यहां दिए जा रहे प्रशिक्षण को पूरी गंभीरता से प्राप्त करें तथा कोई संशय या जिज्ञासा हो तो उसका समाधान प्राप्त करें। प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरांत सभी गांवों में जाकर पशुपालकों से गृह भेंट करेंगे तथा उन्हें पशु स्वास्थ्य और दुग्ध उत्पादन को बढ़ाने के उपायों के बारे में जानकारी देंगे। प्रशिक्षण का उद्देश्य पशुपालकों तक उन्नत नस्ल, पोषक आहार आदि के साथ ही नवीनतम जानकारी और सेवाएं पहुंचाकर उनकी आय को दोगुना करना है। प्रशिक्षण में उप संचालक श्री शुक्ला द्वारा पशुओं की देखरेख, उनके स्वास्थ्य, दुग्ध उत्पादन बढ़ाने हेतु पशुओं को दिए जाने वाले पोषण आहार आदि के बारे में विस्तार से बताया गया।

सोहागपुर विधायक की अनुशंसा पर 01 निर्माण कार्य हेतु 05 लाख 80 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी

नर्मदापुरम (निप्र)। सोहागपुर विधायक श्री विजय पाल सिंह की अनुशंसा पर कलेक्टर सुश्री सोनिया मीना द्वारा विधायक निधि से जनपद पंचायत माखननगर में 01 निर्माण कार्य के लिए 05 लाख 80 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति जारी की गई है। जिला योजना एवं सांख्यिकी कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोहागपुर विधायक श्री विजय पाल सिंह की अनुशंसा पर विधायक निधि से म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ भंडारण केन्द्र माखन नगर में किसान विश्राम शेड निर्माण के लिए 05 लाख 80 हजार रूपये की प्रशासकीय स्वीकृति प्रदान की गई है।

सुपर सीडर मशीन से की गई 25 बीघा क्षेत्र में बोनी, कृषक श्री राजेंद्र सिंह यादव हुए लाभान्वित

विदिशा (निप्र)। जिले में आधुनिक कृषि साधनों के उपयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से सिरोंज विकासखंड के ग्राम कुडका के कृषक श्री राजेंद्र सिंह यादव द्वारा सुपर सीडर मशीन अनुदान पर ली गई है। कृषक द्वारा सुपर सीडर मशीन से स्वयं की 20 से 25 बीघा में बोनी की गई है। कृषक श्री यादव ने कृषि विभाग की अनुदान (सब्सिडी) योजना के अंतर्गत सुपर सीडर मशीन प्राप्त की है, जिसके उपयोग से उन्होंने अपने खेतों में लगभग 25 बीघा क्षेत्र में सफलतापूर्वक बोनी का कार्य पूर्ण कर लिया। सुपर सीडर मशीन से की गई बोनी से भूमि की नमी संरक्षित रहती है, अवशेष प्रबंधन बेहतर होता है तथा कम समय में व्यापक क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण बुवाई संभव हो पाती है। इससे फसल उत्पादन में वृद्धि और लागत में कमी की संभावनाएं और अधिक बढ़ जाती हैं। कृषक श्री यादव ने बताया कि मशीन से कार्य तेज, किफायती और अधिक वैज्ञानिक तरीके से संपन्न हुआ है, जिससे रबी फसलों की समय पर बोनी सुनिश्चित हो सकी। कृषि विभाग द्वारा आधुनिक तकनीक आधारित उपकरणों के प्रति किसानों को प्रोत्साहित करने की लगातार पहल की जा रही है। जो कृषकों के लिए लाभप्रद सिद्ध हो रही है ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पादकता वृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

परीक्षा के दृष्टिगत मकान गणना और जनगणना की अवधि तय करें : सचिव श्री जैन

भारत की जनगणना 2027 : मुख्य सचिव श्री जैन ने राज्य स्तरीय जनगणना समन्वय समिति की बैठक ली

भोपाल। मुख्य सचिव श्री अनुराग जैन ने सभी विभाग अध्यक्षों को निर्देश दिये है कि आगामी जनगणना 2027 के दृष्टिगत प्रशासनिक इकाइयों में जो भी परिवर्तन किये जाने हैं वे 31 दिसम्बर 2025 तक अनिवार्यतः कर लिये जाए। मुख्य सचिव श्री जैन की अध्यक्षता में बुधवार को मंत्रालय में भारत की जनगणना 2027 के दृष्टिगत राज्य स्तरीय जनगणना समन्वय समिति की बैठक संपन्न हुई। उल्लेखनीय है कि जनगणना के प्रथम चरण में मकान सूचीकरण एवं मकानों की गणना का कार्य 01 अप्रैल से 30 सितम्बर 2026 के दौरान 30 दिवस की अवधि में किया जायेगा। मुख्य सचिव ने सम्बंधित विभागों को यह भी सुनिश्चित करने के लिए कहा है कि स्कूली बच्चों की पढ़ाई, मानसून इत्यादि को ध्यान में रखते हुए उक्त 30 दिवस की अवधि निर्धारित की जायें।

बैठक में बताया गया कि जनगणना के द्वितीय चरण में जनसंख्या की गणना का कार्य पूरे देश में एक साथ फ़रवरी 2027 में किया जायेगा। मुख्य सचिव श्री जैन ने स्कूल शिक्षा विभाग को निर्देश दिया गया कि वे जनगणना के द्वितीय चरण को ध्यान में रखकर वर्ष 2026-27 का शैक्षणिक कैलेंडर तैयार करें। उन्होंने परीक्षाओं की समय-सारणी इस तरह तैयार करने के निर्देश दिये है जिससे विद्यार्थीयों को कोई असुविधा नहीं हो। साथ ही सम्बंधित विभागों को यह भी निर्देश दिये गये कि वे आपस में समन्वय करते हुए जनगणना 2027 के लिए मानव संसाधन की उपलब्धता के लिए योजना तैयार करें जिससे जनगणना का कार्य सुचारू रूप से संपन्न हो सके।

मुख्य सचिव श्री जैन ने आगामी जनगणना डिजिटल होने के मद्देनजर सर्वसम्बन्धितों को उचित समय पर युक्तियुक्त प्रशिक्षण दिए जाने की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। श्री जैन ने जनगणना के दौरान स्व-गणना (Self-Enumeration) किये जाने के प्रावधान की सराहना की। उन्होंने सभी सम्बंधित विभागों को यह भी निर्देश दिये कि वे जनगणना 2027 के कार्य के समन्वय के लिए अपने अपने विभागों में एक नोडल अधिकारी नामित करें। जनसंपर्क विभाग को जन सामान्य में जनगणना के प्रति जागरूकता लाने एवं भ्रांतियों को दूर करने के लिए व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश भी दिये गये।

समन्वय के लिए विभागों को एक-एक नोडल अधिकारी नामित करने के निर्देश

मुख्य सचिव श्री जैन ने स्पष्ट रूप से कहा कि आम जन को यह बताया जाना आवश्यक होगा कि जनगणना 2027 पहली बार देश में डिजिटल होगी, जिसमें मोबाईल एप के माध्यम से आंकड़ों का संकलन एवं वेब पोर्टल के माध्यम से मैनेंजमेंट एवं मॉनिटरिंग की जाएगी। उन्होंने कहा कि इस बात का प्रचार होना चाहिए कि जनगणना अधिनियम की धारा 15 के तहत जनगणना में संकलित व्यक्तिगत जानकारियां गोपनीय होती है साथ ही इन्हें कहीं पर भी साक्ष्य के लिए उपयोग नहीं किया जा सकता।

राज्य-स्तरीय जनगणना समन्वय समिति (SLCCC) की इस पहली बैठक में अपर मुख्य सचिव, गृह, अपर मुख्य सचिव, सामान्य प्रशासन, अपर मुख्य सचिव, पंचायत एवं ग्रामीण विकास, आयुक्त नगरीय विकास एवं आवास, सचिव, गृह एवं राज्य नोडल अधिकारी (जनगणना), निदेशक, जनगणना कार्य निदेशालय मध्यप्रदेश,राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी, एन.आई.सी. और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। अपर मुख्य सचिव, गृह श्री शिव शेखर शुक्ला ने बताया कि मध्यप्रदेश में गृह विभाग जनगणना के लिए नोडल विभाग है जो भारत सरकार, जनगणना निदेशालय एवं राज्य सरकार के विभिन्न विभागों के मध्य समन्वय स्थापित करते हुए जनगणना सम्पादन में अपनी भूमिका का निर्वहन करेगा। प्रारंभ में निदेशक, जनगणना कार्य निदेशालय द्वारा पावरपॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से जनगणना 2027 की रूपरेखा, प्रारम्भिक तैयारियां, डिजिटल रोडमैप और संगठनात्मकढांचा इत्यादि के बारे में विस्तृत रूप से अवगत कराया। उन्होंने यह बताया कि इस बार की जनगणना में स्व-गणना (Self-Enumeration) का प्रावधान भी किया जायेगा जिससे कि आम नागरिक अपनी जानकारी स्वयं दर्ज कर सकेंगे।

निदेशक, जनगणना द्वारा बताया गया कि राष्ट्रीय महत्त्व के इस वृहद कार्य में लगभग 1 लाख 75 हजार प्रगणकों एवं पर्यवेक्षकों के अतिरिक्त अन्य प्रशासनिक अमले की भी आवश्यकता होगी। निदेशक जनगणना द्वारा अवगत कराया गया कि जनगणना के प्रथम चरण के पूर्व परीक्षण का कार्य प्रदेश में जिला रतलाम की रतलाम तहसील, जिला सिवनी की कुरई तहसील के कुछ चयनित ग्रामों में तथा ग्वालियर जिले के नगर निगम ग्वालियर के चयनित वार्डों में नवम्बर 2025 में कराया गया। पूर्व परीक्षण कार्य को राज्य शासन एवं सम्बंधित जिला प्रशासन के सहयोग से सफलतापूर्वक पूर्ण कर लिया गया है।

सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के अंतिम निराकरण में तेजी लाने के कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने दिए निर्देश

टीएल बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने की सीएम हेल्पलाईन तथा विभागीय कार्यो की समीक्षा

रायसेन (निप्र)। कलेक्ट्रेट सभाकक्ष में आयोजित टीएल बैठक में कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा विभागीय योजनाओं, गतिविधियों तथा सीएम हेल्पलाईन की विभागवार विस्तृत समीक्षा करते हुए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए गए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा मतदाता सूची का गहन पुनरीक्षण एसआईआर अंतर्गत शेष गणना पत्रकों को शीघ्र डिजिटाइज्ड कराने के निर्देश संबंधित एसडीएम को दिए। उन्होंने विभागवार सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण की समीक्षा करते हुए सभी अधिकारियों को निर्देशित किया कि लंबित शिकायतों का प्राथमिकता से अंतिम निराकरण किया जाए। जिला अधिकारी स्वयं व्यक्तिगत रूप से निराकरण कराएं तथा संबंधित व्यक्ति से चर्चा भी करें। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने राजस्व विभाग की समीक्षा के दौरान कहा कि राजस्व विभाग की सीएम हेल्पलाईन शिकायतों के निराकरण की गति धीमी है, सभी एसडीएम और तहसीलदार शिकायतों के निराकरण में तेजी लाएं।

इसी प्रकार वन विभाग की प्रदेश में 45वी रैंक होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने वन विभाग के अधिकारियों को आगामी सात दिवस में अधिक से अधिक शिकायतों का निराकरण कराने हेतु निर्देशित किया। उन्होंने 50 दिवस और 100 दिवस से अधिक समयावधि वाली शिकायतों का भी अंतिम निराकरण कराने के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने सीएम हेल्पलाईन शिकायतों की समीक्षा के दौरान जबावदावा दर्ज किए बिना शिकायतें अगले स्तर पर प्रेषित होने पर नाराजगी जाहिर की। साथ ही शिकायतें लेबल जम्प वाले विभाग ऊर्जा विभाग, कृषि उपज मण्डी, खनिज साधन विभाग, नगरीय विकास एवं आवास विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग, सेम ग्लोबल विश्वविद्यालय रायसेन, महिला बाल विकास विभाग, राजस्व विभाग, लोक स्वास्थ्य, बैंकिंग तथा स्कूल शिक्षा विभाग के संबंधित अधिकारियों को नोटिस जारी करने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री विश्वकर्मा द्वारा बैठक में जैविक प्राकृतिक खेती के कलस्टर विकसित किए जाने तथा जैविक उत्पादों के विक्रय हेतु केन्द्र के बारे में उप संचालक कृषि श्री केपी भगत से जानकारी लेते हुए कहा कि अधिक से अधिक किसानों को जैविक खेती से जोड़ा जाए। साथ ही जैविक उत्पादों के विक्रय हेतु सभी निकायों में बाजार भी उपलब्ध कराएं।

उन्होंने सब्जी की खेती के कलस्टर, दुग्ध उत्पादन के कलस्टर, फूलों की खेती आदि के कलस्टर विकसित किए जाने के कार्य में भी तेजी लाने के निर्देश दिए। इसी प्रकार सीएमएचओ से इट राइट कैम्पेन के तहत की जा रहीं गतिविधियों की जानकारी लेते हुए गंभीरता के साथ क्रियान्वयन के निर्देश दिए। बैठक में कलेक्टर श्री विश्वकर्मा ने शासकीय कार्यालयों के व्यवस्थीकरण तथा रिकार्ड संधारण की जानकारी लेते हुए सभी एसडीएम को निर्देशित किया कि जिले के सभी एसडीएम कार्यालयों को आईएसओ सर्टिफाइड कराना है तथा इसके उपरांत तहसील कार्यालयों को आईएसओ सर्टिफाइड कराना है।

सशस्त्र सेना झण्डा दिवस के उपलक्ष्य में अधिकारियों को ध्वज लगाया

विदिशा (निप्र)। भारतीय सशस्त्र सेनाओं के ऐसे जवान जो देश की रक्षा, राज्य की सुरक्षा, आंतरिक सुरक्षा के दौरान एवं प्राकृतिक आपदाओं में कर्तव्य पालन करते समय वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं, उनका स्मरण करने, सम्मान देने तथा देश आम नागरिकों का अपने सैनिकों के प्रति एकजुटता प्रकट करने के लिए देश में प्रतिवर्ष 07 दिसम्बर का दिन सशस्त्र सेना झण्डा दिवस के रुप में मनाया जाता है। उक्त दिवस को देश की रक्षा करते हुए शहीद हुए जवानों के परिवारों के कल्याण, विधवा एवं विकलांगों की आर्थिक रुप से सहायता प्रदान करने के लिए ध्वज वितरित कर धन राशि एकत्रित की जाती है। इस अवसर पर विदिशा जिला मुख्यालय पर 07 दिसम्बर से 13 दिसम्बर तक सशस्त्र सेना झण्डा सप्ताह के अन्तर्गत आज 08 दिसंबर सोमवार को कलेक्ट्रेट के बेतवा सभाकक्ष में अपर कलेक्टर श्री अनिल कुमार डामोर, जिला पंचायत सीईओ सहित अन्य अधिकारियों को ध्वज लगाया जाकर स्वेच्छिक दान राशि संग्रहित की गई। कलेक्ट्रेट के बेतवा सभाकक्ष में भोपाल जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कर्नल राजीव खत्री के निर्देशानुसार सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर विदिशा सैनिक कल्याण बोर्ड के डब्ल्यूओ सेवा निवृत्त श्री सूबेदार चंद्रभान सिंह, केप्टन श्री एसपी चतुर्वेदी, सूबेदार मेजर श्री संतोष श्रीवास्तव, हवलदार श्री रामनारायण मीणा, हवलदार श्री एचडी बैरागी, नायक श्री नरेंद्र शर्मा, नायक श्री रविंद्र यादव आदि पूर्व सैनिकों ने अधिकारियों को सशस्त्र सेना झंडा दिवस के अवसर पर फ्लैग लगाकर झंडा दिवस की शुभकामनाएं दी और पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों ,वीर नारीयों के लिए के लिए राशि एकत्रित की।

कृषि विभाग प्रति सप्ताह जिले मैं एक दिन जैविक हाट बाजार लगाए : कमिश्नर कृष्ण गोपाल तिवारी

राजस्व संग्रहण करने वाले विभाग तथा निर्माण विभाग इस वित्तीय वर्ष में शत प्रतिशत लक्ष्य पूरा करें कमिश्नर ने संभागीय समय सीमा की बैठक में दिए निर्देश

नर्मदापुरम (निप्र)। नर्मदापुरम संभाग कमिश्नर श्री कृष्ण गोपाल तिवारी ने उपसंचालक कृषि श्री जे आर हेडाऊ को निर्देश दिए कि सप्ताह में एक दिन जिले के किसी भी स्थान पर जैविक हाट बाजार लगाना सुनिश्चित करें। जैविक हाट में जैविक उत्पादन एवं सामग्री भरपूर मात्रा में रहे और जैविक हाट का व्यापक प्रचार प्रसार कर लोगों को जैविक सामग्री एवं वस्तुएं खरीदने के लिए प्रेरित भी किया जाए। कमिश्नर ने राजस्व संग्रहण करने वाले खनिज विभाग, जिला आबकारी विभाग, जिला परिवहन विभाग, कमर्शियल टैक्स विभाग को इस वित्तीय वर्ष में राजस्व संग्रहण के सभी लक्ष्य की शत प्रतिशत पूर्ति करने के निर्देश दिए, साथ ही उन्होंने निर्माण विभाग सेतु निर्माण विभाग, लोक निर्माण विभाग, प्रधानमंत्री सड़क निर्माण विभाग, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग, ग्रामीण यांत्रिकी विभाग को अपने सभी निर्माण कार्य इस वित्तीय वर्ष में ही पूर्ण करने के निर्देश दिए।

कमिश्नर ने बैंक आधारित विभाग जनजाति कार्य विभाग, उद्यानिकी विभाग, उद्योग विभाग, कृषि विभाग आदि विभागों को भी अपने लक्ष्य इसी वित्तीय वर्ष में पूर्ण करने के निर्देश देते हुए कहां की वे हितग्राहियों को विभिन्न योजनाओं में बैंक ऋण की स्वीकृति प्राथमिकता से कराना सुनिश्चित करें और शासन द्वारा दिए गए लक्ष्य की शत प्रतिशत पूर्ति करना भी सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने बैठक में भावांतर योजना में प्राप्त भावांतर की राशि, मॉडल रेट के संबंध में जानकारी ली। उन्होंने निर्देश दिए की जिले के धार्मिक क्षेत्र में गुलाब की खेती को बढ़ावा देने के लिए उद्यानिकी विभाग विशेष कार्य योजना बनाकर कार्य संपादित करना सुनिश्चित करें। उन्होंने एक बगिया मां के नाम कार्यक्रम की विस्तृत समीक्षा करते हुए हितग्राहियों की जानकारी ली। कमिश्नर ने डॉ भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना के संबंध में समीक्षा करते हुए निर्देश दिए की जिले के सभी क्षेत्रों में दुग्ध उत्पादन को बढ़ाना देने के लिए विशेष रणनीति बनाई जाए। बताया गया कि इस योजना के तहत दिए गए 10 लक्ष्य में से पांच लक्ष्य को पूरा कर स्वीकृति हेतु शासन को प्रेषित किया गया है। कमिश्नर ने मत्स्य पालन विभाग के अधिकारी को निर्देश दिए कि वह मत्स्य पालन में आधुनिक तकनीकी को बढ़ावा देने एवं मत्स्य उत्पादन को बढ़ावा देने के संबंध में किए गए कार्यों की जानकारी अगले सप्ताह देना सुनिश्चित करें। कमिश्नर ने कहा कि मत्स्य पालकों को आधुनिक तकनीक का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाए ताकि उनके रोजगार में बढ़ोतरी हो सके और वह मत्स्य पालन से लाभ कमा सकें। कमिश्नर श्री तिवारी ने कलेक्टर्स एवं जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को निर्देश दिए कि वह जिला स्वास्थ्य समिति की नियमित बैठक आयोजित ले तत् संबंध में उन्होंने संयुक्त संचालक स्वास्थ्य विभाग को निर्देश दिए कि वह नियमित बैठकों की प्रोसिडिंग से उन्हें अवगत कराए। कमिश्नर श्री तिवारी ने हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं एवं शिशुओ की देखरेख तथा कुपोषित बच्चों की चिन्हाकन के संबंध में आवश्यक निर्देश दिए, साथ ही निर्देश दिए की कलेक्टर एवं अधिकारीगण समय-समय पर स्कूलों का निरीक्षण अनिवार्य रूप से करें।

अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस

अधिकारों के साथ ही कर्तव्य बोध भी आवश्यक पूरक हैं अधिकार और कर्तव्य : विधानसभा अध्यक्ष

'महिला सशक्तिकरण एवं मानवाधिकार' विषय पर हुआ मंथन

भोपाल (नप्र)। अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर विधानसभा अध्यक्ष श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा है कि अधिकार और कर्तव्य एक दूसरे के पूरक हैं। आधिकारों के लिए कानून बनाये गये हैं, उन्हें लिखित रूप से परिभाषित किया जा सकता है, किंतु कर्तव्यों का बोध करना और कराना पड़ता है। जब हम आधिकारों के प्रति जागरुकता प्रदर्शित करते हैं तो कर्तव्य पालन का भी ध्यान रखना आवश्यक है। विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने यह बात अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस के अवसर पर 'महिला सशक्तिकरण एवं मानवाधिकार' विषय पर आरसीवीपी नरोन्हा प्रशासन एवं प्रबंधकीय अकादमी में बुधवार को आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुये कही।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने कहा कि महिला सशक्तिकरण प्राचीनकाल से ही हमारे संस्कारों में शामिल रहा है। हमारी संस्कृति में महिलाओं का स्थान सर्वोपरि रहा है। प्रचीनकाल से ही हमारी मातृ-शक्ति साहस, युद्ध-कौशल, तपस्या, त्याग और विद्वता से संपन्न रही हैं। उन्होंने कहा कि महिला संरक्षण और सशक्तिकरण के लिये प्रावधानों के साथ ही उनके प्रभावी क्रियान्वयन का ध्यान रखना भी आवश्यक है। हमारे समाज में महिलाओं के सम्मान और सशक्तिकरण के भाव सदैव मौजूद रहे हैं। हमें पारंपरिक संस्कार और मान्यताओं में आई विकृतियों के प्रति सजग रहते हुए उनके निवारण के प्रयास तो करने ही चाहिये साथ ही उसके मूल सृजनात्मक स्वरूप और उपलब्धियों पर गर्व भी करना चाहिये।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी समाज की छोटी-छोटी कमजोरियों के प्रति सजग और संवेदनशील हैं। उनके कुशल नेतृत्व में आज देश की 2.5 लाख से अधिक पंचायतों में 14 लाख महिला प्रतिनिधि निर्वाचित हुई हैं। इसके साथ ही सरपंच से सांसद तक हमारी निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या कई देशों की कुल जनसंख्या अधिक है। देश में 10 करोड़ बहनें 9 लाख स्व-सहायता समूहों के साथ जुड़कर उद्यमिता से समाज सेवा तक महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। कोविड काल में 'आशा' कार्यकर्ताओं का योगदान इसका अतुलनीय उदाहरण है।

विधानसभा अध्यक्ष श्री तोमर ने मध्यप्रदेश में प्रधानमंत्री श्री मोदी के मार्गदर्शन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के प्रयासों से मध्यप्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिये अभूतपूर्व प्रयास हुए हैं और उनके परिणाम भी अच्छे आये हैं। उन्होंने प्रदेश के अभिभावकों को भी धन्यवाद दिया, जिनके प्रयासों से और संस्कारों से देश की बेटियां पुलिस, सैनिक एवं अर्ध-सैनिक बलों में, उद्यमिता एवं व्यवसाय प्रबंधन, प्रशासन खेल समेत शैक्षणिक आदि सभी क्षेत्रों में देश प्रदेश का परचम लहरा रही हैं।

महिला एवं बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा कि महिलाओं के मानवाधिकार और सशक्तिकरण सरकारों की संवैधानिक और समाज की नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के विजन को अमल में ला रहे मुख्यमंत्री डॉ. यादव के मार्गदर्शन में राज्य सरकार महिलाओं की समस्याओं और उनके सशक्तिकरण के प्रति सजग और संवेदनशील हैं। मध्यप्रदेश देश का पहला राज्य बन गया है, जिसने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं की पूर्णतः ऑनलाइन पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया लागू की है। हाल ही में 19 हजार से अधिक आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं की पूर्णतः पारदर्शी ऑनलाइन भर्ती कर इसका उदाहरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने कहा कि हमारी केंद्र व राज्य सरकारों महिलाओं के मानवाधिकारों की रक्षा के प्रति सजग और सक्रिय हैं और हमारे प्रयास एवं योजनायें उसका आधार बने हैं। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा कि वह आदिवासी समाज से हैं और समाज की महिलाओं की परेशानियां समझती हैं, इसलिये उनके निवारण के प्रति संवेदनशील हैं। उन्होंने परिवारों को भी इसके प्रति सजग रहते हुए बेटियों के साथ ही बेटों को भी बचपन से ही महिलाओं की रक्षा, संरक्षण और सशक्तिकरण के संस्कार देने होंगे।

मानवाधिकार आयोग के सदस्य डॉ. अवधेश प्रताप सिंह ने कहा कि देश में महिला सशक्तिकरण के साथ ही मानवाधिकारों के सुधार की दिशा में केंद्र व राज्य सरकारें सजग हैं और समन्वित प्रयास किये जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति सभ्यता के उदय के साथ इसके प्रति संजन और संवेदनशील है।

यूएन वूमेन की स्टेट हैड सुश्री रे ने पारंपरिक रूप से घर, सार्वजिनक स्थलों के साथ ही आधुनिक डिजिटल स्पेस में भी महिलाओं के संरक्षण और सशक्तिकरण की आवश्यकता जताई।

आयोजन में महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा महिला सशक्तिकरण योजनाओं के प्रेजेन्टेशन दिया गया। प्रेजेन्टेशन में लाड़ली-बहना और लाड़ली-लक्ष्मी योजनाओं के क्रांतिकारी प्रभावों का उल्लेख करते हुए बताया गया कि केन्द्र और राज्य सरकारों की योजनाओं से प्रदेश के लिंगानुपात में प्रभावशाली सुधार हुआ है।

आयोग के प्रमुख सचिव श्री मुकेश चंद गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत किया। आभार प्रदर्शन आयोग के उप सचिव श्री डी.एस. परमार ने किया। इस अवसर पर महिला सशक्तिकरण और मानव अधिकार विषय पर आधारित स्मारिका का विमोचन किया गया। आयोग की ओर से अतिथियों को स्मृति-चिन्ह भी भेंट किये गये।

सागर में पुलिस वैन-कंटेनर की भिड़ंत, 4 जवानों की मौत

गाड़ी काटकर शव निकाले, नक्सल ऑपरेशन के लिए गए थे, पुलिस का डॉग सुरक्षित

सागर (नप्र)। सागर के नेशनल हाईवे-44 पर बांदरी के पास बुधवार सुबह एक भीषण सड़क हादसा हो गया। यहां तेज रफ्तार कंटेनर और पुलिस के वाहन में आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में पुलिस वाहन में सवार 4 जवानों की मौत हो गई, जबकि एक जवान गंभीर रूप से घायल है, जिसे एयरलिफ्ट कर दिल्ली के गंगाराम हॉस्पिटल ले जाया गया। वहीं, टीम में शामिल डॉग सुरक्षित है।

जानकारी के अनुसार मुरैना जिले का बम निरोधक दस्ता और डॉग स्क्वॉड बालाघाट में ड्यूटी पर तैनात था। पुलिसकर्मी नक्सल विरोधी अभियान में शामिल हुए थे। वहां से वे बीडी-डीएस वाहन में सवार होकर वापस मुरैना लौट रहे थे। इसी दौरान नेशनल हाईवे पर बांदरी के पास झिंझनी घाटी पर सामने से आ रहे कंटेनर से पुलिस वाहन की भिड़ंत हो गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि डॉग मास्टर समेत चार जवानों की जान चली गई।

जानकारी के मुताबिक, एनएच- 44 पर अंडरब्रिज का निर्माण कार्य चल रहा है। इस कारण से बांदरी के पास हाईवे का ट्रैफिक वन वे हो गया है। इसी के चलते आमने-सामने से भिड़ंत हो गई।

तीन पुलिसकर्मी भिंड, एक मुरैना का था

1. आरक्षक प्रद्युम्न दीक्षित, फूफ, भिंड
2. अनिल कौरव, टेकोन गांव, भिंड
3. विनोद शर्मा, पुलिस लाइन, भिंड
4. परिमल सिंह तोमर, नखती अंबाह, मुरैना

मुख्यमंत्री ने सागर में सड़क दुर्घटना में 4 पुलिसकर्मियों के निधन पर व्यक्त किया शोक

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सागर जिले में सड़क दुर्घटना में 4 पुलिसकर्मियों के निधन पर गहन शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा है कि आज सुबह नक्सल विरोधी अभियान से ड्यूटी कर लौट रहे पुलिस दल की भीषण सड़क दुर्घटना में 4 पुलिसकर्मियों के निधन का समाचार अत्यंत हृदय विदारक है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दिवंगत पुलिसकर्मियों को श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने शोकाकुल परिजनों के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट की हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ईश्वर से दिवंगत पुलिसकर्मियों की आत्माओं की शांति के लिए प्रार्थना की है। उन्होंने सड़क दुर्घटना में घायल पुलिकर्मियों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना की है।

पहले रोका... फिर जीतू पटवारी समेत 5 नेता को जंगल भेजा

सिंगरौली में 6 लाख पेड़ों की कटाई पर हंगामा कांग्रेस बोली-प्रशासन अडाणी के पक्ष में

सिंगरौली (नप्र)। सिंगरौली जिले के बासी बेरदहा क्षेत्र में बड़े पैमाने पर हो रही कथित पेड़ कटाई को लेकर कांग्रेस का जोरदार विरोध बुधवार को देखने को मिला। घिरौली गांव के पास दो घंटे तक सड़क पर चले धरने के बाद शाम करीब 4:30 बजे प्रशासन ने जीतू पटवारी, ओंकार मरकाम,

कमलेश्वर पटेल, जयवर्धन सिंह और नेहा कावरे को एक कार से मौके पर जंगल की ओर भेजा। उनकी गाड़ी के आगे-पीछे पुलिस के वाहन चल रहे हैं और पूरी आवाजाही पुलिस निगरानी में हो रही है।

जांच टीम को पहले रोका गया, सड़क पर बैठा विपक्ष- कांग्रेस की 12 सदस्यीय जांच टीम सुबह सिंगरौली पहुंची थी, लेकिन पुलिस ने टीम को बासी बेरदहा जाने से पहले ही घिरौली गांव के पास रोक दिया। इसके बाद कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता वहीं सड़क पर धरने पर बैठ गए। मौके पर करीब 200 से ज्यादा कांग्रेसी मौजूद रहे और प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी की गई।

उमंग सिंघार और विक्रांत भूरिया बाइक से जंगल पहुंचे- पुलिस की रोक के बावजूद नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार और सांसद विक्रांत भूरिया बाइक से जंगल की ओर निकल गए और कटाई स्थल तक पहुंचने में सफल रहे। वहीं सड़क पर रुके नेताओं ने इसे लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन बताया।

पटवारी का आरोप-प्रशासन अडाणी के पक्ष में- प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने कहा कि अगर सब कुछ नियमों के तहत हो रहा है तो जांच टीम को जंगल देखने और आदिवासी परिवारों से मिलने से क्यों रोका जा रहा है। उन्होंने केंद्र सरकार और अडाणी समूह पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि जिला प्रशासन एकतरफा कार्रवाई कर रहा है।

अजय सिंह बोले-अनुमति नहीं मिली तो धरना जारी रहेगा- पूर्व नेता प्रतिपक्ष और चुरहट विधायक अजय सिंह 'राहुल भैया' ने प्रशासन पर तानाशाही का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस केवल अपनी जांच टीम को अंदर भेजना चाहती थी, लेकिन पुलिस अनुमति नहीं दे रही थी। उन्होंने चेतावनी दी थी कि अनुमति मिलने तक धरना जारी रहेगा।

800 से ज्यादा पुलिसकर्मी तैनात, सुरक्षा कड़ी- स्थिति को देखते हुए घिरौली गांव से आगे जाने वाले मार्ग पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया। सिंगरौली समेत सीधी, रीवा, सतना, मऊगंज, भोपाल, मंडला और छिंदवाड़ा से पुलिस बल बुलाया गया। कुल 800 से अधिक पुलिसकर्मी और क्यूआरएफ मौके पर तैनात हैं। प्रशासन के अनुसार स्थिति फिलहाल नियंत्रण में है।

बड़ी कांग्रेस टीम, कटाई रोकने की मांग- जांच और विरोध टीम में जीतू पटवारी, उमंग सिंघार, अजय सिंह, विक्रांत भूरिया, जयवर्धन सिंह, मीनाक्षी नटराजन, हेमंत कटारे, बाला बच्चन, हिना कावरे, ओंकार मरकाम और कमलेश्वर पटेल शामिल हैं। सभी नेताओं ने पेड़ कटाई पर तुरंत रोक और जिम्मेदारों पर सख्त कार्रवाई की मांग की।

स्थानीय ग्रामीणों का कहना है कि बड़े पैमाने पर पेड़ कटाई से हरियाली खत्म हो जाएगी और भविष्य में प्रदूषण व जलसंकट जैसी गंभीर समस्याएं खड़ी होंगी। कांग्रेस की टीम पूरे मामले की रिपोर्ट तैयार कर अपने शीर्ष नेतृत्व को सौंपेगी।

ट्रैक्टर नहर में गिरा, तीन किसानों की मौत

टूटी पुलिया पर अंधेरे में नहीं दिखा रास्ता, ट्रॉली के नीचे दबे थे शव

भिंड (नप्र)। भिंड में टूटी पुलिया से एक ट्रैक्टर नहर में जा गिरा। ट्रैक्टर में सवार तीन किसानों की मौत हो गई। तीनों के शव ट्रॉली के नीचे दबे गए। हादसा जिले के लहार थाना क्षेत्र में नानपुरा गांव के पास मंगलवार देर रात हुआ। पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से शवों को बाहर निकलवाया और हॉस्पिटल भिजवाया।

मृतकों की पहचान रावतपुरा सानी गांव निवासी झींगुरी सिंह राजपूत (80), बलवीर सिंह राजपूत (70) और शिब्बू उर्फ शिवेंद्र सिंह राजपूत (35) के रूप में हुई है। ये तीनों धान बेचने के लिए उत्तर प्रदेश गए थे। मंगलवार देर शाम वापस लौट रहे थे। रात करीब 10 बजे नानपुरा गांव के पास टूटी पुलिया से गुजरते वक्त अंधेरे में ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर सीधे नहर में पलट गया।

खेत में पानी दे रहे किसानों ने देखा

हादसा अंधेरे में हुआ, इसलिए किसी को तुरंत इसकी जानकारी नहीं मिल पाई। पास के खेतों में पानी दे रहे कुछ किसानों की नजर नहर में उल्टे पड़े ट्रैक्टर-ट्रॉली पर पड़ी। पास जाकर देखा तो तीनों किसान ट्रैक्टर के नीचे दबे हुए थे। ग्रामीणों ने तुरंत लहार पुलिस को सूचना दी। खबर मिलते ही टीआई शिवसिंह यादव पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे।

ट्रैक्टर के नीचे दबे मिले शव

पुलिस और ग्रामीणों की मदद से नहर के पानी में फंसे ट्रैक्टर को हटाया गया। इसके नीचे दबे तीनों किसानों के शव बाहर निकाले गए। ट्रैक्टर-ट्रॉली के नीचे दबने और पानी में डूबने से तीनों की मौके पर ही मौत हो चुकी थी।

मध्यप्रदेश में जलवायु वित्त जुटाने पर भोपाल में कार्यशाला का आयोजन

भोपाल (नप्र)। राज्य की विकास प्राथमिकताओं के अनुरूप जलवायु वित्त समाधान विकसित करने और राज्य स्तरीय जलवायु वित्त रणनीति तैयार करने के उद्देश्य से, डब्ल्यूआरआई इंडिया ने पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन (एप्को) और क्लाइमेट पॉलिसी इनिशिएटिव (सीपीआई) के सहयोग से बुधवार को भोपाल में 'मध्यप्रदेश में जलवायु वित्त जुटाने पर भोपाल में कार्यशाला' विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यशाला में शासकीय विभाग, शोध संस्थानों, वित्तीय संस्थानों, अकादमिक संगठन और अन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने राज्य के जलवायु वित्त परिदृश्य, जलवायु अनुकूल विकास के लिए व्यावहारिक रणनीतियों और प्रमुख क्षेत्रों में उभरते अवसरों पर चर्चा की।

अपर मुख्य सचिव पर्यावरण श्री अशोक बर्णवाल ने कहा कि जलवायु वित्त अब उन राज्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण सक्षम साधनों में से एक बन गया है, जो मध्यप्रदेश की तरह बढ़ते जलवायु जोखिमों का सामना कर रहे हैं। इस विकास पथ को उच्च-उत्सर्जन मार्ग पर जाने से रोकने के लिए हमें जलवायु वित्त तक पहुंच को मजबूत करना होगा और सभी क्षेत्रों में नीतिगत रूप से सक्षम परियोजनाएँ विकसित करनी होंगी। विभागों के बजट अभ्यासों में

जलवायु वित्त को शामिल करना आवश्यक है और इसके लिए उच्च गुणवत्ता की परियोजनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हमें न केवल शासकीय विभागों और निजी क्षेत्र, बल्कि आमजन की क्षमताओं की वृद्धि और उनकी संवेदनशीलता बढ़ाने की भी आवश्यकता है। मिशन लाइफ इस दिशा में एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित हो सकता है। कार्यपालन संचालक एप्को श्री दीपक आर्या ने कहा कि हाल ही में जारी किया गया राज्य जलवायु परिवर्तन कार्य योजना एक महत्वपूर्ण प्रगति का संकेत है, लेकिन वित्तीय अंतर अब भी बहुत बड़ा है। अनुकूलन और शमन प्रयासों के लिए लगभग 97 हजार करोड़ रुपये की आवश्यकता का अनुमान है। केवल सार्वजनिक बजट इस अंतर को पूरा नहीं कर सकते, इसलिए राज्य में प्रभावी जलवायु कार्रवाई को आगे बढ़ाने के लिए निजी निवेश, मिश्रित वित्त, कार्बन बाज़ारों और बहुपक्षीय जलवायु कोषों को जुटाना अत्यंत आवश्यक है। एप्को प्रत्येक हितधारक को उच्च गुणवत्ता की परियोजनाएँ विकसित करने और उपलब्ध जलवायु वित्त अवसरों का लाभ उठाने के लिए हर प्रकार का सहयोग प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है। समन्वयक, जलवायु परिवर्तन ज्ञान प्रबंधन केन्द्र एप्को श्री लोकेन्द्र ठक्कर ने कहा कि एप्को ने विभिन्न वित्तपोषण योजनाओं का उपयोग करने के लिए लगातार प्रयास किए हैं और राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन पर रणनीतिक ज्ञान मिशन ,राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना और सेंटर फॉर क्लीन एयर पॉलिसी के तहत सफलतापूर्वक धनराशि जुटाई है, जिसके माध्यम से उप-राष्ट्रीय स्तर पर जलवायु कार्रवाई और परियोजनाओं को लागू किया गया है।

भगवान महाकाल को अब नहीं चढ़ेगी भारी-भरकम फूलमाला

प्रशासक ने 1 जनवरी से प्रतिबंध लगाया, 500 से 2100 रुपए तक बिकती थी

उज्जैन (नप्र)। श्री महाकालेश्वर मंदिर के शिवलिंग पर भारी भरकम चढ़ने वाली फूल माला (अजगर माला) और मुण्डमाल पर मंदिर समिति ने प्रतिबंध लगा दिया है। एएसआई और जीएसआई की गाइड लाइन का ध्यान रखते हुए करीब 10 किलो से अधिक वजनी मालाओं पर शिवलिंग क्षरण रोकने के लिए मंदिर समिति ने ये फैसला किया है। 1 जनवरी से कोई भी भक्त भगवान महाकाल को 10 से 15 किलो वजनी माला अर्पित नहीं कर सकेंगे।

ज्योतिर्लिंग महाकाल मंदिर में 1 जनवरी 2026 से भगवान महाकाल को चढ़ने वाली फूलों की बड़ी व भारी माला अर्पित करने पर रोक लगा दी है। मंदिर प्रशासक के आदेश के बाद आगामी नए वर्ष के पहले दिन से इसे पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया जाएगा।

इसके लिए अभी महाकाल मंदिर परिसर में उद्घोष हो रहा है कि भगवान के लिए अजगर माला नहीं खरीदें। साथ ही कक्ष से भक्तों को नए नियम की जानकारी देने के लिए लगातार उद्घोषणा भी

की जा रही है। मंदिर के आसपास फूल प्रसाद की दुकान संचालित करने वाले व्यवसायियों को मंदिर समिति ने बता दिया है कि फूलों की भारी व बड़ी माला ना तो बनाए और न ही विक्रय करे।

भक्त पुजारी को देते थे चढ़ाने के लिए- 500 से 2100 रुपए तक बिकने वाली इन अजगर मालाओं को भक्त खरीद कर शिवलिंग को अर्पित कर रहे थे। भक्त पुजारी को देते और पुजारी भगवान महाकाल को पहना देते थे। मंदिर प्रशासक प्रथम कौशिक ने बताया कि महाकाल मंदिर के शिवलिंग पर चढ़ने वाले भारी अजगर माला पर आगामी एक जनवरी से प्रतिबंधित कर दिया है।

500 से 2100 रुपए में मिलती 1 माला

पिछले कुछ वर्षों से महाकाल मंदिर के बाहर फूलों की दुकान पर 500 से 2100 रुपए में मिलने वाली अजगर माला को भक्त खरीदकर भगवान को अर्पित कर रहे थे। ये माला फूलों की मोटी व बड़ी माला होती है, जिनका 10 से 15 किलो तक होता था।

नया नियम लागू होने के बाद मंदिर के विभिन्न द्वारों पर तैनात गार्ड भक्तों द्वारा भगवान को अर्पण करने के लिए लाई जा रही पूजन सामग्री की जांच करेंगे। बड़ी व भारी फूल माला को गेट पर ही अलग रखवा दिया जाएगा।

क्षरण रोकने के लिए किए उपाय

सुप्रीम कोर्ट ने ज्योतिर्लिंग महाकाल के क्षरण की जांच तथा उसे रोकने के उपाय करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) तथा भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) की टीम गठित की थी। विशेषज्ञों ने ज्योतिर्लिंग की सुरक्षित रखने के लिए कई सुझाव दिए। इसमें एक सुझाव भगवान महाकाल को फूलों की छोटी माला तथा समिति मात्रा में फूल अर्पण का था।